ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ
ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು – 570 006.

Karnataka State Open University
Manasagangothri, Mysore - 570 006.

अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी

M.A. Previous HINDI
Course / Paper - V

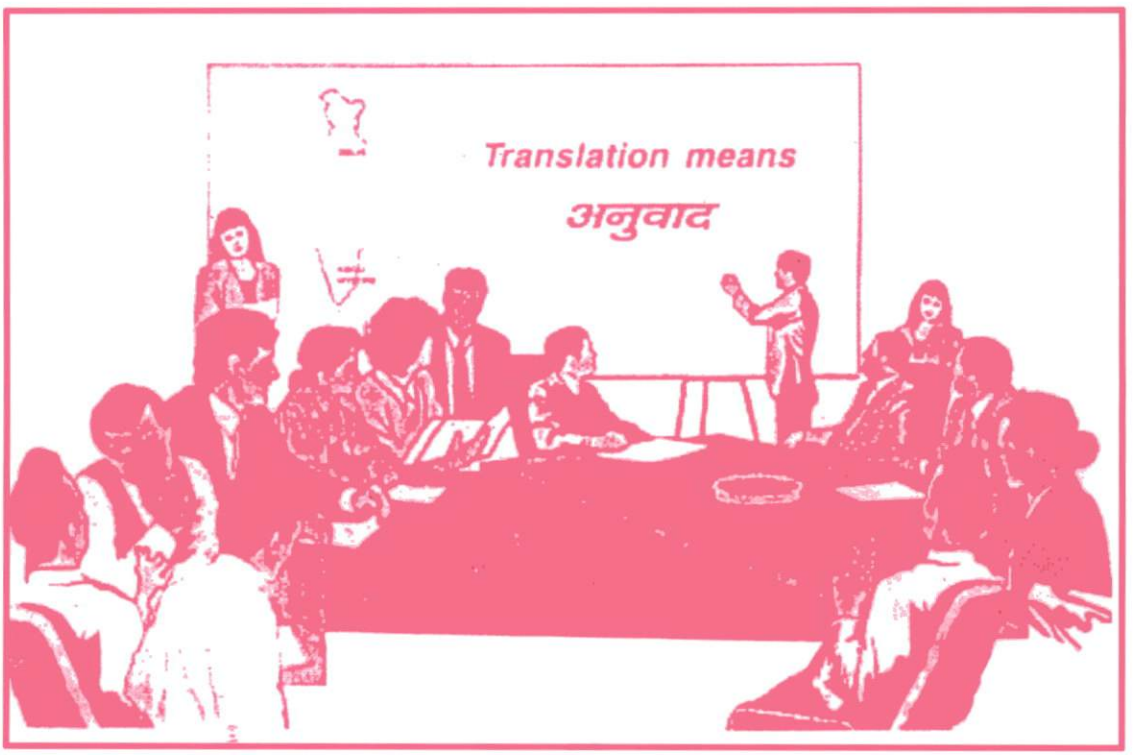

Block - 3

ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾತಂತ್ರೀಕರಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಲಾಗಿದೆ.

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ 1986

ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವು ದೂರಶಿಕ್ಷಣ ಪದ್ಧತಿಯಲ್ಲಿ ಬಹುಮಾಧ್ಯಮಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತದೆ. ..... ವಿದ್ಯಾಕಾಂಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಕಲಿಕಾ ಕೇಂದ್ರಕ್ಕೆ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ಬದಲು, ಜ್ಞಾನ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಯುವವರ ಬಳಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ವಾಹಕವಾಗಿದೆ.

ಡಾ || ಕುಳಂದೈಸ್ವಾಮಿ

The Open University system has been initiated in order to augment opportunities for higher education and as an instrument of democratising education.

National Education Policy 1986

The Open University system makes use of Multi-media in distance education system. ..... it is a vehicle which transports knowledge to the place of learners rather than transport people to the place of learning.

Dr. Kulandai Swamy

प्रथम एम.ए. - कोर्स पाँचवाँ

Course - V, Paper - V

3

''अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी''

'' अनुवाद ''

Unit No. 10 to 13		Page No.
अनुक्रमणिका		

इकाई	10	काव्यानुवाद	1 - 35
इकाई	11	नाटक का अनुवाद	36 - 53
इकाई	12	मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद	54 - 83
इकाई	13	कार्यालयी अनुवाद	84 - 107

पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संपादकीय समिति

प्रो.एम.जी.कृष्णन
उप कुलपति तथा अध्यक्ष
क.रा.मु.वि.विद्यालय,
मैसूर - 6

प्रो.एस.एन.विक्रमराज अरस
डीन (शैक्षणिक) - संयोजक
क.रा.मु.वि, विद्यालय
मैसूर - 6

डॉ.कांबले अशोक
अध्यक्ष , हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि.विद्यालय
मैसूर - 6

संयोजक

डॉ.मिथाली भट्टाचार्य
रीडर, हिन्दी विभाग
ज्ञानभारती, बेंगलूर वि.विद्यालय
बेंगलूर - 56

संपादिका

पाठ्यक्रम के लेखक

डॉ.सरगु कृष्णमूर्ति
प्रोफेसर
बेंगलूर विश्वविद्यालय

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर, शैक्षणिक अनुभाग द्वारा निर्मित ।
सभी अधिकार सुरक्षित । कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना, इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में अनुलिपित या किसी अन्य माध्यम द्वारा प्रतिकृति नहीं किया जाएगा ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम पर अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर - 6 से प्राप्त की जा सकती है ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से **रजिस्ट्रार (प्रशासन)** द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ब्लाक परिचय

प्रिय विद्यार्थी,

आपने **ब्लॉक - एक** में अनुवाद की परिभाषा एवं प्रतीकांतर, अनुवाद का महत्व, प्रक्रिया तथा अनुवाद कला, विज्ञान और तंत्र अनुवाद के प्रकार आदि के बारे में और **ब्लॉक - दो** में अनुवाद की शैलियाँ, आदर्श अनुवादक की योग्यताएँ एवं गुण, अनुवाद की समस्याएँ तथा अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली । अब आप **ब्लॉक - तीन** में काव्यानुवाद और उसका महत्व, नाटक का अनुवाद तथा मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद, कार्यालयी अनुवाद के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

शुभकामनाओं के साथ,

डॉ.कांबले अशोक
अध्यक्ष , हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मैसूर - 6.

इकाई दस

काव्यानुवाद

10.0. प्रस्तावना

10.1. उद्देश्य

10.2. साहित्यिक अनुवाद

10.3. काव्यानुवाद

10.3.1. काव्यानुवाद की संभावना

10.3.2. काव्यानुवाद की कठिनाई

10.4. काव्यानुवाद की समस्याएँ

10.5. काव्यानुवाद से संबंधित मत

10.6. काव्यानुवाद की कठिनाई के कारण

10.7. काव्यानुवाद संबंधी विचार

10.7.1. कलात्मक शब्दानुवाद

10.7.2. कथ्य और कथन का योग : डॉ.मिताली जी का मत

10.7.3. काव्यानुवाद संभव है

10.7.4. निकटतम समतुल्य

10.8. काव्यानुवाद की मुख्य कठिनाइयाँ

10.9. काव्यानुवाद का व्याख्या रूप

10.10. काव्यानुवाद के प्रकार

10.11. काव्यानुवाद पुनःसृजन है ।

10.11.1. मूल कवि की आत्मा का ग्रहण

10.11.2. काव्यानुवाद में भावानुवाद की महत्ता

10.11.3. गद्य-पद्य चयन

10.11.4. रूपातंरण की विशेषता

10.11.5. कविता का अनुसृजन

10.11.6. काव्यानुवाद में मूल तत्वों का आनयन

10.11.7. ध्वनि व वर्णमैत्री

10.11.8. अर्थ बिम्ब

10.11.9. अलंकारों का अनुवाद : उपमान का अर्थ भेद

10.11.10. छंद

10.11.11. मध्यम मार्ग के रूप में गद्य काव्य

10.11.12. अनुवादक के व्यक्तित्व का प्रतिफलन

10.11.13. निकटतम प्रतीकन

10.11.14. कवि हृदय

10.11.15. अनूदित रचना का काव्य रूप

10.11.16. मूल की लय की रक्षा

10.11.17. जटिलता : डॉ.मिताली जी का मत

10.11.18. अनुभूति की अनूद्यता : डॉ.भोलानाथ तिवारी का मत

10.11.19. कवि की छाया

10.11.20. कवितानुवाद कविता में

10.11.21. गद्यानुवाद के पक्ष में

10.11.22. क्षतिपूरक सिद्धांत

10.11.23. सफल काव्य अनुवादक

10.11.23.1. अंग्रेजी से कन्नड में कृत काव्यानुवाद

10.11.23.2. कन्नड से अंग्रेजी में कृत काव्यानुवाद

10.11.23.3. हिन्दी से रूसी में कृत काव्यानुवाद

10.11.23.4. हिन्दी से कन्नड में प्रस्तुत काव्यानुवाद

10.11.23.5. संस्कृत से कन्नड में प्रस्तुत अनुवाद

10.11.23.6. हिन्दी से कन्नड में कृत काव्यानुवाद

10.11.23.7. अंग्रेजी से हिन्दी में कृत काव्यानुवाद

10.11.23.8. कन्नड से हिन्दी में अनूदित काव्य

10.11.23.9. यूरोपीय काव्यों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में

10.11.23.10. फारसी से अनुदित काव्य

10.11.23.11. उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद

10.12. निष्कर्ष

10.13. सारांश

10.14. प्रश्न

10.15. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

10.16. शब्दावली

10.17. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

10.0. प्रस्तावना

पूर्व अध्यायों में आपने अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण, तत्व, महत्व, सिद्धांत आदि विषयों की जानकारी हासिल की है । अनुवाद के साहित्यिक प्रकारों में काव्यानुवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है । प्रस्तुत घटक में काव्यानुवाद की महत्ता, एतदनुवाद में संभाव्य समस्याएँ, सफल काव्यानुवाद के लिए आवश्यक विभिन्न आयाम आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त करेंगे । काव्यानुवाद अत्यंत जटिल है, किन्तु असंभव नहीं है । इस इकाई में आप इस तथ्य से अवगत होंगे कि कथानुवाद, नाटकानुवाद, वैज्ञानिक अनुवादं आदि की अपेक्षा काव्यानुवाद इसलिए कठिन है कि उसमें ध्वनि, रस, छन्द, प्रतीकात्मकता आदि तत्वों का अत्यंत संयत एवं सक्षम निर्वहण करना पड़ता है । जहाँ श्लेष अलंकार होता है वहाँ अनुवादक को पूर्णतः जागरूक रहना पड़ता है । 'आज तुम अपना कर दो' का अनुवाद 'कर' शब्द में निहित श्लेष के सफल निर्वहण से ही संभव है, क्योंकि 'कर' के कई अर्थ हैं, यथा - किरण, हाथी का सूँड, हाथ, करना आदि । काव्यानुवाद में शैली तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है अनुवादक को मूल कवि की आत्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करना पड़ता है।

10.1. उद्देश्य

प्रस्तुत घटक में साहित्यिक अनुवाद के प्रकारों का उल्लेख करते हुए उनमें से सबसे जटिल भेद काव्यानुवाद से संबंधित विभिन्न आयामों का निरूपण किया गया है । काव्य मानव की सारभूत अनुभूति का निचोड़ है ; उसके मन और मस्तिष्क के समस्त सौंदर्य तथा शक्ति का भंडार है ; कवि के जीवन के सर्वश्रेष्ठ क्षणों का अभिलेख है । कथ्य और कथन की दृष्टि से काव्य में

तदितर विषयों की अपेक्षा अन्य कई विशेषताएँ होती हैं । अतः काव्य का अनुवाद असिधाराव्रत बन जाता है । हंबोल्ट, वर्जीनिया उल्फ आदि काव्यानुवाद को अंभव बताते हैं । डॉ.भोलानाथ तिवारी एवं डॉ.मिताली भट्टाचार्य के अनुसार काव्यानुवाद जटिल है, किन्तु असंभव नहीं है ।

साहित्य जगत में इस संबंध में भी मतभेद है कि काव्य का अनुवाद पद्य में हो या गद्य में । कतिपय मनीषी पद्य का पक्ष लेते हैं और चंद विद्वान गद्य का समर्थन करते हैं । काव्यानुवाद में कई कठिनाइयाँ अनुवादक के सम्मुख आती हैं । ये कठिनाइयाँ अनुवादक में नई स्फूर्ति की ज्योति जगाती हैं।

काव्य के विशेष घटक रस, अलंकार, छन्द, औचित्य, ध्वनि, बिंब, चित्र, भावच्छवि आदि के अनुवाद की विशिष्टताएँ अनुवादक को नए पंथ पर चलाती हैं । काव्य के अनुवाद से संबंधित विभिन्न समस्याओं से अवगत कराकर पाठक में काव्यानुवाद करने की प्रेरणा उत्पन्न करना प्रस्तुत निबंध का उद्देश्य है ।

10.2. साहित्यिक अनुवाद

साहित्यिक अनुवाद में रूपभेद के अनुसार अनुवाद की प्रकृति भी भिन्न हो जाती है । साहित्यिक अनुवाद के कई भेद हैं यथा - काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथानुवाद, जीवनी, अनुवाद आदि । सबसे जटिल भेद है काव्यानुवाद ।

10.3. काव्यानुवाद

साहित्य एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सृजन प्रक्रिया है । इसके दो रूप हैं - ज्ञान साहित्य और शक्ति साहिन्य । ज्ञान साहित्य के अंतर्गत प्रशासनिक साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य आदि आते हैं जबकि शक्ति साहित्य के अंतर्गत काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, संस्मरण आदि सम्मिलित हैं । साहित्य के दो रूप हैं - काव्य अर्थात् पद्य एवं गद्य । गद्य का अनुवाद सरल है, जबकि काव्य का अनुवाद कठिन है । गद्यानुवाद की अपेक्षा काव्यानुवाद इसलिए अधिक कठिन है कि काव्य में अलंकार, छंद, ध्वनि आदि कुछ ऐसे तत्व होते हैं, जिनका अनुवाद सरल नहीं है ।

10.3.1. काव्यानुवाद की संभावना

काव्यानुवाद अति कठिन प्रक्रिया है, तथापि इसे असंभव नहीं कह सकते । अब तक हजारों काव्यग्रंथों का अनुवाद हुआ है । कई प्रतिभा-सम्पन्न रचयिता काव्यों का अनुवाद इस प्रकार कर रहे हैं कि लक्ष्य भाषा के पाठक अनुवाद का ऐसा ही रसास्वादन कर रहे हैं, जैसा कि स्रोत भाषा के पाठक मूलपाठ का रसास्वादन करते हैं । मूल पाठ के कथ्य और शिल्प की सभी विशेषताएँ अनुवाद में लाने का प्रयत्न अनुवादक कर रहे हैं ।

10.3.2. काव्यानुवाद की कठिनाई

कविता एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है । डॉ.तिप्पेस्वामी के शब्दों में कविता कवि के भाव एवं कल्पना की समेकित अभिव्यक्ति है । कविता की यह अभिव्यक्ति अलंकारों से विभूषित होकर छंदों की झंकृति में नर्तन करती है । आलंकारिक

भावप्रवणता, ध्वन्यात्मकता, संगीतात्मकता आदि से समंचित कविता के सभी अंशों को अनुवाद में प्रतिस्थापित करना अत्यंत कठिन है । शब्द और अर्थ के लावण्य को अनुवाद में प्रतिस्थापित करना बायें हाथ का खेल नहीं है । डॉ.तिप्पेस्वामी के शब्दों में सृजन का अनुसृजन अपने आप में एक चुनौती है, साहस भरा काम है ।

10.4. काव्यानुवाद की समस्याएँ

काव्यानुवाद की समस्याओं का विवेचन करते हुए डॉ.विश्वनाथ अय्यर बताते हैं कि काव्य में लक्षणा, व्यंजना, प्रतीक, मिथक आदि का प्रयोग होता है । अनुवाद में उनकी छवि प्रस्तुत करना अत्यन्त कठिन है । प्रतीक और मिथक के साथ देश की संस्कृति, इतिहास आदि जुड़े रहते हैं । डॉ.विश्वनाथ अय्यर के शब्दों में - पश्चिमी काव्य में वीनस सौंदर्य का, एचिलिस शक्ति का, जुडास धोकेबाजी का एवं वाटर लू पराजय का प्रतीक है ।

भारतीय परिवेश में इन प्रतीकों की संगति नहीं बैठती । यहाँ मन्मथ, भीम, शकुनी, कुरुक्षेत्र आदि प्रतीक काम देते हैं । भारतीय आचार परंपरा से संबंधित श्राद्ध, सप्तपदी, आरती, सिंदूर, हवन आदि शब्दों के समानार्थक शब्द पश्चिमी भाषा में नहीं मिल सकते । डॉ.तिप्पेस्वामी के निबंध ''काव्यानुवाद : एक पुनःसृजन'' से उधृत इन प्रतीकों का अनुवाद अत्यंत कठिन है । जब तक स्रोत भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास से परिचय प्राप्त नहीं करते तब तक प्रतीकों का अनुवाद संभव नहीं है ।

10.5. काव्यानुवाद से संबंधित मत

1. **जॉनसन**

जॉनसन काव्यानुवाद को अत्यन्त कठिन बताते हैं -

Poetry cannot be simply translated

2. **फ्रॉस्ट**

फ्रॉस्ट के अनुसार अनुवाद में कविता खो जाती है -

Poetry is what gets lost in translation

3. **हिब्रू कवि**

एक हिब्रू कवि का कथन है -

Translation of poetry is like fishing one's sweet heart through veil.

डॉ. हरिवंशराय बच्चन

डॉ. हरिवंशराय बच्चन के अनुसार पद्य का अनुवाद असंभव-सा प्रतीत होता है । कविता में शब्दार्थ के अतिरिक्त और कई बातें होती हैं । अनुवाद में मात्र शब्दार्थ ही लाया जाता है ।

डॉ.तिप्पेस्वामी

डॉ.तिप्पेस्वामी के अनुसार काव्यानुवाद में मूल कविता के अंश गुम होने की आशंका रहती है । केवल शरीर के ही अनुवाद में आने की संभावना रहती है । अनुवाद के माध्यम से रसानुभव प्राप्त करने का प्रयत्न परदे के पीछे से सुख लेने के बराबर है, तथापि कई अनुवादकों ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है ।

10.6. काव्यानुवाद की कठिनाई के कारण

डॉ.तिवारी जी के शब्दों में काव्य का अनुवाद जो किसी कविता का यथासंभव निकटतम समतुल्य होता है, ठीक मूल ही नहीं होता - हो सकता है, किया जा सकता है । हाँ, कभी वह मूल से काफी दूर होता है । कविता का अनुवाद इसलिए कठिन होता है कि काव्य में मुछ ऐसे तत्व होते हैं, जो अन्य विधाओं में नहीं होते और जिन्हें अनुवाद में ला पाना काफी कठिन होता है ।

डॉ.वी.एस.नरवणे काव्यानुवाद की असंभाव्यता संबंधी विद्वानों के विचारों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि विद्वान काव्य के अनुवाद के विचारों को ही विवेक शून्य और असाध्य बताते हैं । उनके अनुसार काव्य का अनुवाद मानो रवि रश्मियों को तिनके के रूप में गूँथने का काम करता है और जॉनसन घुमा - फिराकर कहने के बजाय सीधे शब्दों में कहते हैं कि काव्य को अनूदित नहीं किया जा सकता ।

डॉ.तिवारी लिखते हैं - बहुतों की धारणा यह रही है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता यथा -

1) Translation of poetry is simply an attempt to solve an unsolvable problem - Humboit
2) It is useless to read Greek in Translation. it is a vague equivalent - Virginia
3) There is no such thing as translation - May.
4) Traduttori traditori - इतालवी कहावत
5) Flowering movements of the mind lose half their petals in speech and 3/4 in translation.
6) No sounds harmonised by the bond of Muses can be changed from one language to another - Dante

7) Translation is as tasteless as a stewed strawberry - H.de Forest Smith

8) Meddling with inspiration - Showerman

9) Ideals can be translated, but not the words and their associations - Sydney

10.7.1. कलात्मक शब्दानुवाद

कलात्मक अनुवाद ही साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकते हैं । शब्दानुवाद की यह विशेषता है कि इसमें मूल ग्रंथ की भाषा में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों एवं बोल-चाल की विशेषताओं के वास्तविक रूपों की सुगंध अनुवाद में संव्याप्त होती है ।

10.7.2. कथ्य और कथन का योग : डॉ.मिताली जी का मत

कथ्य और कथन के योग के संबंध में डॉ.मिताली भट्टाचारजी लिखती हैं कि कविता जो प्रभाव पाठक या श्रोता पर डालती है, वह न तो अकेला कथ्य का होता है और न अकेले कथन का । वह दोनों का योग होता है । कथ्य की विशिष्टता विशिष्ट अभिव्यक्ति पर और अभिव्यक्ति की विशिष्टता विशिष्ट कथ्य पर निर्भर करती है ।

छूटनेवाले अंशों की पूर्ति नये अंशों से

अभिव्यक्तियों के संतुलित योग से एक-सा प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है । यही कारण है कि काव्यानुवाद में प्रायः मूल प्रभाव का, या प्रभाव उत्पन्न करनेवाले मूल काव्य तत्वों का कुछ अंश छूट जाता है और कुछ ऐसा अंश जुड़ जाता है, जो मूल में नहीं होता । इससे वह कमी, एक सीमा तक पूरी हो जाती

है, जो कुछ छूट जाने से उद्‌भूत होती है । जोड़ने की प्रक्रिया से अनुवाद में जान आ जाती है ।

फिजेराल्ड ने उमर खैयाम के अनुवाद में अपनी ओर से काफ़ी जोड़ा है । वे कहते हैं - अनुवाद में अपनी रुचि के अनुसार मूल को फिर से ढालना चाहिए - भूसा भरे गीध की अपेक्षा मैं जीवित गौरैया चाहूँगा । वे इस जोड़ने या संस्कार करने के पक्षपाती थे ।

10.7.3. काव्यानुवाद संभव है

डॉ.भोलानाथ तिवारीजी के अनुसार कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन तो है, किन्तु वह असंभव है - यह नहीं कहा जा सकता । विश्व में अब तक कई सहस्र कविताओं के अनुवाद हुए, अनुवाद हो रहे हैं और आगे होते रहेंगे ।

10.7.4. निकटतम समतुल्य

कविताओं के बहुत कम ही अनुवाद मूल का पूर्ण रूपेण कथ्य और कथन शैली दोनों दृष्टियों का प्रतिनिधित्व करती हैं । मूल और अनुवाद में अन्तर होता ही है । निकटतम समतुल्य से संतृप्त होना चाहिए ।

10.8. काव्यानुवाद की मुख्य कठिनाइयाँ

डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार काव्यानुवाद की कठिनाइयाँ ये हैं -

1. स्रोतभाषा के सभी शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द आंतरिक, बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि से सर्वथा समान नहीं होते ।
2. अलंकारों का अनुवाद कठिन है ।
3. छन्दों की स्थिति भी अलंकारों से कम जटिल नहीं ।

4. काव्यानुवाद का कवि अपने व्यक्तित्व को मूल रचना और अनुवाद के बीच में लाने से अपने को रोक नहीं पाता ।

5. अर्थ रचना और अभिव्यंजना की जटिलताएँ प्रायः अनूद्य नहीं होतीं ।

6. विशिष्ट कविता का अनुवाद विशिष्ट व्यक्तिनिष्ठ होता है ।

7. एक भाषा की काव्य रचना अर्थतः अभिव्यक्तितः और प्रभावतः केवल उसी भाषा में हो सकती है, किसी अन्य में नहीं ।

8. **आत्मसात् करने की कठिनाई**

जब तक अनुवादक मूल रचना की आत्मा में प्रवेश नहीं करता, तब तक अनुवाद सफल नहीं बन सकता । आत्मसात् करने से ही अनुवाद सजीव बन सकता है । शब्द के बदले शब्द रखने की यांत्रिक क्रिया से अनुवाद निर्जीव बनता है ।

डॉ.तिप्पेस्वामी के शब्दों में - प्रतिभा और पांडित्य के बल पर मूल रचना में परकाय प्रवेश करने की क्षमता अनुवादक में होनी चाहिए ।

9. **सहृदयता**

कवि हृदय रखनेवाला कोई भी सहृदय सफल काव्यानुवादक बन सकता है । कवि सहज सहृदय न हो तो अनुवादक सफल नहीं बन सकता ।

10. **शास्त्रीय ज्ञान**

कविता छन्द, अलंकार, ध्वनि आदि की झंकारों से दिव्य निनाद सुनाती हुई बहनेवाली सुरगंगा है । शास्त्रीय ज्ञान के बिना इस सुरगंगा का स्रोतभाषा से लक्ष्य भाषा में पुनः सृजन करना अत्यन्त कठिन है ।

11. **काव्य के कलापक्ष की पुनःस्थापना**

काव्य के कलापक्ष की पुनःस्थापना अत्यन्त कठिन समस्या है ।

डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार शब्दों के कलापक्ष का संबंध वर्ण, वर्णमैत्री, शब्दालंकार, छन्द आदि से होता है । यह एक सत्य है कि इन सब का अनुवाद नहीं हो सकेगा । अंग्रेज़ी या फारसी में उतने छन्द कहाँ से लायेंगे, जितने संस्कृत में हैं या हिन्दी में हैं । और फिर यह व्यवस्था कैसे हो सकेगी कि अमुक रस या भाव के अमुक अमुक छन्द ही उचित हों (अनुवाद त्रैमासिक - अंक 21- 22 पृष्ठ -10)

एक ही परिवार की भाषाओं के बीच अनुवाद कार्य किया जा सकता है । संस्कृत से प्रभावित द्रविड भाषाओं के मूल पाठ का अनुवाद हिन्दी या बंगाल में सरलता से किया जाता है ।

डॉ.तिप्पेस्वामी के अनुसार हृदय एवं बुद्धि पक्ष का संगम हो तो सफल अनुवाद निकलता है ।

12. **सतत अभ्यास**

काव्यानुवाद कार्य सरल नहीं है । लक्ष्यभाषा के उत्कृष्ट काव्य ग्रन्थों का अध्ययन करने से उस भाषा के रहस्यों का परिचय मिलता है, अन्यथा लक्ष्य भाषा में आवश्यक सुभगता स्थापित नहीं कर सकते ।

10.9. काव्यानुवाद का व्याख्या रूप

काव्यानुवाद को कई विद्वान असंभव बताते हैं । तथापि अनेक श्रेष्ठ काव्यानुवाद हुए हैं और हो रहे हैं । विश्व के अनेक श्रेष्ठ कवियों ने काव्यानुवाद किये हैं और अनेक भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाएँ भी काव्यानुवाद मात्र हैं । डॉ.जी.गोपीनाथन के शब्दों में काव्यानुवाद पूर्णतः पुनःसृजन की प्रक्रिया है । इसी कारण से काव्यानुवाद कभी व्याख्या, टीका, रूपान्तरण, छाया, प्रतिध्वनि, भाषान्तरण आदि रूपों में हुए हैं । अनुवाद के डच विद्वान जेम्स होल्म्स के अनुसार अनुवाद मूलतः एक व्याख्या है और किसी-किसी कविता का अनुवाद वास्तविक काव्यानुवाद से लेकर अन्य भाषा में लिखित उसी पर आधारित कविता या आलोचना तक हो सकता है ।

10.10 काव्यानुवाद के प्रकार

होल्म्स के प्रारूप को स्वीकार करते हुए डॉ.जी.गोपीनाथन जी काव्यानुवाद के निम्न प्रकार बताते हैं -

1. पद्यानुवाद
2. लयात्मक गद्यानुवाद
3. गद्यानुवाद
4. स्वतंत्र गद्यानुवाद
5. अनुकरण

6. कविता से प्रभावित कविता
7. प्रतिध्वनि अनुवाद
8. आलोचना/आस्वादन
9. व्याख्या/टीका

इनमें से पद्यानुवाद, लयात्मक गद्यानुवाद एवं गद्यानुवाद वास्तविक काव्यानुवाद के रूप हैं । स्वतंत्र गद्यानुवाद, अनुकरण, कविता से प्रभावित कविता एवं प्रतिध्वनि अनुःसृजन के रूप हैं, जबकि व्याख्या, टीका, आलोचना, आस्वादन आदि गद्य में व्याख्या के रूप हैं ।

10.11. काव्यानुवाद पुनःसृजन है

कविता एक संश्लिष्ट कलात्मक रूप है और उसका अनुवाद इसलिए अनेक रूपों - प्रकारों में हो सकता है । यही नहीं, एक ही कविता के विभिन्न कवियों द्वारा किये गये अनुवाद प्रायः स्वतंत्र रचनाओं के रूप धारण करते हैं । तात्पर्य यह है कि कविता का अनुवाद कलात्मक पुनःसृजन की प्रक्रिया है । कविता के अनुवाद या पुनःसृजन के लिए मूल के सृजन की मनोभूमि को पकड़ना आवश्यक है ।

10.11.1. मूल कवि की आत्मा का ग्रहण

इसके लिए मूल कवि की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है । यह काम एक अत्यंत संवेदनशील अनुवादक ही कर सकता है, जो स्वयं में या तो कवि हो या कम से कम कवि हृदय रखता हो । इसीलिए प्रायः कहा जाता है कि काव्य का सफल अनुवाद कवि द्वारा ही हो सकता है । कविता एक ऐसी संरचना है, जिसे एक ही भाषा में भी अन्य शब्दों में कहने पर उसका सौंदर्य नष्ट हो जाता है ।

10.11.2. काव्यानुवाद में भावानुवाद की महत्ता

काव्यानुवाद में शब्दानुवाद से काम नहीं चलता, प्रायः भावानुवाद या नवीन सृजन आवश्यक हो जाता है । हिन्दी के प्रसिद्ध अनुवादक बच्चन अपनी मौलिक कविताओं से बढ़कर अपने काव्यानुवादों में अधिक सफल निकले हैं । इसके रहस्य का उद्‌घाटन उन्होंने 'उमर खय्याम की रुबाइयात' की भूमिका में किया है । वे लिखते हैं - अपने अनुवाद के विषय में मुझे केवल यह कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा हूँ । भावों को ही मैंने प्रधानता दी । प्रकारान्तर से बच्चन जी के लिए अनुवाद मौलिक सृजन जैसा ही है । विशिष्ट कवियों की विशिष्ट मनःस्थितियाँ ही उनकी कविताओं की आधारशिला हैं । अनुवादक को मूल कवियों की भावना को पकड़कर नवीन सृजन करना पड़ता है । तभी अनुवाद ज्यादा सफल होता है । श्री अरविन्द के अनुसार काव्यानुवाद का कार्य मूल के शब्दों को अनुवाद में उतारना मात्र नहीं हैं बल्कि उसके बिंब, काव्य सौंदर्य एवं शैली की विशेषताओं की भी पुनर्रचना करनी पड़ती है ।

10.11.3. गद्य-पद्य चयन

अनुवादक के सामने यह समस्या खड़ी होती है कि वह कविता का अनुवाद कविता में करे या गद्य में करे । यह अत्यन्त जटिल समस्या है । अनुवाद का माध्यम यदि पद्य हो तो लय, अन्तर्लय, गेयात्मकता आदि की रक्षा होती है । गद्यानुवाद में काव्य के अंशों की रक्षा नहीं हो सकती । गद्यानुवाद कभी - कभी व्याख्या का रूप धारण करता है । इस प्रक्रिया में रसास्वादन कुंठित हो जाता है । अतः कतिपय अनुवादक कविता का अनुवाद कविता में

ही करते हैं । योग्य अनुवादक भाव की रक्षा करते हुए काव्य के सभी अंशों की सुगन्ध अनुवाद में सुरक्षित रखते हैं ।

10.11.4. रूपांतरण की विशेषता

कविता पाठक के मन पर एक विशेष प्रकार की छाया डालती है, जिसके कारण वह अपने को एक स्वप्निल संसार में पाता है । ऐसी भावबंधुर कविताओं का अनुवाद करना मूर्खता मात्र है । ऐसी स्थिति में मूल से ही मिलता जुलता रूपान्तर अनुवाद की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है । रचनात्मक अनुवाद की जटिलता इससे दूर होती है । रूपान्तरण में शब्दानुवाद का समुचित प्रयोग होना चाहिए ।

10.11.5. कविता का अनुसृजन

कविता सृजन है तो अनुवाद अनुसृजन हे । यह अनुसृजन तभी सफल बन सकता है, जब अनुवादक मूल पाठ को आत्म-सात् करके मूल कवि के हृदय को अपने हृदय में प्रतिस्थापित कर लेता है । कविता को कविता के रूप में ही अनूदित कर अनुवादक मूल कवि के मन एवं मस्तिष्क के मंदार मकरन्द माधुर्य को अद्‌भुत उपलब्धि के रूप में प्रदान कर सकता है । इस प्रक्रिया में अनुवादक को उन क्षणों का जीवन व्यतीत करना होगा, जिन क्षणों की मधुर या मार्मिक अवधि में मूल कवि ने कविता का सृजन किया था, अर्थात् परकाय प्रवेश करना चाहिए । इस प्रकार के परकाय प्रवेश या योग का परिणाम ही सफल काव्यानुवाद सिद्ध हो सकता है ।

10.11.6. काव्यानुवाद में मूल तत्वों का आनयन

श्री तीर्थ वसंत के शब्दों में - कविता में निहित लय, ताल, उपमा, रूपक एवं साधारण शब्दों का असाधारण रूप में कृत प्रयोग - इनको अन्य भाषा में लाना कठिन है । भाव, अनुभूति, विचार एवं कल्पना किसी विशिष्ट भाषा की धरोहर होती है । ये विशेषताएँ प्रायः सभी भाषाओं की कविताओं में होती हैं । अनुवाद में इनका आनयन कठिन है । इनके आनयन से अनुवाद में प्राणों की प्रतिष्ठापना होती है ।

10.11.7. ध्वनि व वर्णमैत्री

शब्दों का प्रयोग एवं सुचारु चयन कविता लिखते समय कवि अधिकाधिक करता है । वह जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वे शब्द प्रायः अपने कोशीय अर्थ या साधारण अर्थ के अतिरिक्त ध्वनि से कुछ अन्य अर्थ भी देते हैं । ध्वनि और अर्थ का संबंध विशिष्ट शब्दों की विशेषता होती है और इनके कारण कविता में विशेष प्राणों की गंध आ जाती है । अनुवाद में प्रायः उस शब्द का प्रतिशब्द कोशीय अर्थ ही दे पाता है । ध्वनि, वर्णमैत्री आदि के स्तर का अनुवाद संभव नहीं हो पाता है, क्योंकि हर भाषा में एतद्वत् शब्द होते ही नहीं, जिनमें अर्थ और ध्वनि का यह संबंध हो । शब्द में निहित ध्वनि उसकी जान है । बिजली में 'तेजी' और 'तरलता' की भी ध्वनि है । अंग्रेजी के अनुवाद में Thunder या Thunder bolt रखे तो इनमें 'कड़क' है और Lightning रखे तो 'चकाचौंध' है, जो बिजली के लिए पर्याप्त नहीं है । अनुवाद में मूल की 'तेज़ी' और 'तरलता' चली गई और नये तत्व 'कड़क' या 'चकाचौंध' की वृद्धि हो

गई । इसमें कुछ घट गया और कुछ बढ़ गया । डॉ.भोलानाथ तिवारी जी का उपर्युक्त विवेचन अत्यंत तर्क संगत है ।

10.11.8. अर्थ बिंब

प्रत्येक भाषा के प्रत्येक शब्द का अपना अर्थबिंब होता है । वह सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबद्ध होता है । दूसरी भाषा में उपलब्ध उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण उससे वैसा अर्थ बिंब नहीं उभर सकता । Spring में इंग्लैंड के स्प्रिंग का चित्र है, जो भारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है । हिन्दी के अनुवाद को पढ़नेवाले पाठक के मन में जो अर्थ बिंब उभरेगा, वह भारतीय वसंत का होगा । रूस का 'जाड़ा' और अरब का 'जाड़ा' अलग हैं । भारत की गर्मी और इंग्लैंड़ की गर्मी बिलकुल अलग हैं । काव्यभाषा में प्रयुक्त इन शब्दों का प्रतिनिधित्व इसीलिए किसी भी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्द नहीं कर सकते ।

10.11.9. अलंकारों का अनुवाद : उपमान का अर्थ भेद

काव्य की भाषा प्रायः अलंकार प्रधान होती है । एक भाषा के अलंकारों को दूसरी भाषा में ठीक-ठीक उतार पाना कठिन है । अर्थालंकार भी उपमानों की असमानता के कारण अनूदित नहीं हो सकते । वह उल्लू जैसा है - वाक्य में उल्लू मूर्खता का प्रतीक है, किन्तु इसका अंग्रेजी अनुवाद करना हो और उल्लू के स्थान पर owl रख दे तो काम नहीं चलेगा । अंग्रेजी में उल्लू बुद्धिमान माना जाता है । अनुप्रास आदि शब्दालंकारों का अनुवाद और भी कठिन है । ''कनक

कनक ते सौंगुनी मादकता अधिकाय । यह खाये बौराय जग, वह पाये बौराय।।" में कनक के दो अर्थ हैं सोना तथा धतूरा । अनुवाद में यमक निर्वहण कठिन है ।

10.11.10. छंद

कविता छन्दोबद्ध होती है और हर छन्द की अपनी गति होती है । उसका अपना प्रभाव भी होता है । एक सीमा तक कविता के भाव से संबद्ध भी होता है । भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छन्द हैं। यूरोपीय भाषाओं मे अन्य प्रकार के छंद हैं । लक्ष्य भाषा में प्राप्त छन्द में अनुवाद कर दे तो मूल छन्द का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा या फिर स्रोत सामग्री के छन्द में ही अनुवाद करे तो उस छन्द को उस भाषा में उतार पाना आसान नहीं होगा । अनुवादक के एक तरफ़ कुआँ है तो दूसरी तरफ़ खाई । वह असमर्थ है । मूल छन्द का जो प्रभाव मूल भाषा-भाषियों पर पड़ता है, लक्ष्य भाषा-भाषियों पर नहीं पड़ सकता ।

10.11.11. मध्यम मार्ग के रूप में गद्य काव्य

मूल के रचना-विन्यास की रक्षा के लिए बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है । गद्यानुवाद से भावों की रक्षा एक सीमा तक संभव है । अतुकांत कविता अथवा गद्य काव्य ही संभवतः मध्यम मार्ग है, जिसके माध्यम से कविता के विशिष्ट गुण बहुत कुछ उतारे जा सकते हैं ।

10.11.12. अनुवादक के व्यक्तित्व का प्रतिफलन

हर अनुवादक मूल विषय को अपने ढंग से कहता है । अनुवादक का

व्यक्तित्व मूल और अनुवाद के बीच में अधिक आ जाता है, अतः मूल और अनुवाद में अन्तर पड़ जाता है ।

10.11.13. निकटतम प्रतीकन

डॉ.भोलानाथ तिवारी जी 'अनुवाद विज्ञान' में लिखते हैं कि सफल काव्यानुवाद अतीव कठिन कार्य है, किन्तु वह असंभव नहीं है । अनुवाद मूल के निकट ही होता है, मूल नहीं होता, हो भी नहीं सकता । अंग्रेज़ी में अनुवाद करने में बहुत कठिनाई होती है, जबकि संस्कृत से प्राकृत में या प्राकृत से संस्कृत में या बंगाली से हिन्दी में या हिन्दी से बंगाली में अनुवाद करने में उपर्युक्त कठिनाइयाँ बहुत कम होती हैं । सामान्य शाब्दिक और व्याकरणिक परिवर्तन से ही काम चलता है ।

10.11.14. कवि हृदय

कविता का अनुवाद प्रायः कवि ही करते हैं । वस्तुतः कवि हृदय ही काव्यानुवाद के साथ न्याय कर सकता है । कविता का अनुवाद अन्य अनुवादों से इस बात में भिन्न है कि वह एक प्रकार से पुनर्रचना है । कविता का अनुवाद मूल कविता का एक नया संस्करण ही है । डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवादक मूल काव्य को हृदयंगम कर पुनर्रचना करता है । विज्ञान, वाणिज्य या यहाँ तक कि उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के अनुवाद में भी हम देखते हैं कि एक ही सामग्री का अनुवाद दो या चार अनुवादक अलग-अलग करें तो उनके अनुवादों में आपस में बहुत अधिक अन्तर नहीं होता, जबकि एक ही कविता के कई व्यक्तियों द्वारा किए गए अनुवादों में काफी अन्तर होता है । मूल काव्य के

अपने-अपने ढंग के संस्करण वे प्रस्तुत करते हैं ।

10.11.15. अनूदित रचना का काव्य रूप

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के अनुसार काव्यानुवाद का सबसे विवादास्पद पहलू अनूदित रचना के काव्यरूप के संबंध में है । कई अनुवादक तो इसी में विश्वास करते हैं कि मूल जैसे या मूल के समान छन्दों में ही अनुवाद किया जाना चाहिए । 'रामचरितमानस' का अकादमीशियन वारान्निकोव द्वारा किया गया रूसी अनुवाद मूल जैसे दोहे, चौपाई एवं अन्य छंदों में है । कई अनुवादक छन्दोबद्ध अनुवाद की अपेक्षा गद्यानुवाद को ही पसन्द करते हैं । ई.वी.रियू जैसे अनुवादक लयात्मक गद्य के पक्षधर हैं । कई विद्वानों के अनुसार भारतीय भाषाओं के काव्यों के अनुवाद के लिए टैगोर द्वारा 'गीतांजली' के अनुवाद में प्रयुक्त मुक्त छन्द एक अच्छा नमूना हो सकता है । जो भी हो, मूल की सूक्ष्म लय एवं संगीत को स्रोतपाठ में भी लाने का प्रयास काव्यानुवादक को करना चाहिए । इसमें दो रायें नहीं हैं । हायकू जैसे विशिष्ट काव्य रूपों के अनुवाद में मूल काव्य रूप की पंक्तियाँ, अक्षर, शब्दावली आदि पर भी ध्यान देना आवश्यक है ।

मूल भाषा से सीधे अनुवाद करने पर काव्यरूप, छन्द व लय पर ध्यान रखना आसान हो जाता है । लेकिन कभी कभी पूर्व अनुवादों पर निर्भर होकर अनुवाद किया जाता है और मूल की लय का आभास भी अनुवाद में आ नहीं पाता ।

10.11.16. मूल की लय की रक्षा

भाषान्तरणों के बीच मूल की लय लगभग समाप्त हो जाती है और पद्यात्मक अनुवाद एकरस सा लगने लगता है । उचित तो यही है कि भाव को दृष्टि में रखकर लय को उसी के अनुरूप बाँधा जाय । कविता के अनुवाद में अनुसृजन अथवा रसात्मक मौलिक सृजन का सा आभास देनेवाली कवि प्रतिभा आवश्यक है ।

10.11.17. जटिलता : डॉ.मिताली जी का मत

डॉ.मिताली जी के शब्दों में काव्य भाषा अपनी अर्थ रचना में बहुत ही जटिल होती है । यह जटिलता ही काव्य के सौंदर्य की जननी है । वह सबसे अधिक बाधक भी होती है । जिन पंक्तियों की काव्यभाषा अर्थ रचना के स्तर पर जितनी ही ज़टिल होती है, उनका अनुवाद उतना ही कठिन होता है । साहित्यिक रचना का अभिव्यंजना पक्ष जितना ही स्थूल और सपाट होगा उसका अनुवाद उतनी ही सरलता के साथ किया जा सकेगा । सूक्ष्म और जटिल अभिव्यंजना प्रधान तथा अर्थ जटिल रचना का अनुवाद सभी के वश की बात नहीं, उसको छन्दोबद्ध कर पाना तो और भी कठिन है । डॉ.भोलानाथ जी के शब्दों में मौलिक रचना के लेखक की तरह ही, ऐसा अनुवाद भी बहुत कुछ विशिष्ट भावदशा या मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है । काव्य-रचना का अनुवाद भी विशिष्ट काव्य रचना की तरह ही, विशिष्ट भावदशा-निष्ठ होता है ।

10.11.12. अनुभूति की अनूद्यता : डॉ.भोलानाथ तिवारी का मत

डॉ.तिवारी के शब्दों में कविता अनुभूति है और सच्ची अनुभूति अनूद्य नहीं हो सकती । साथ ही कोई कवि अपने जिन क्षणों को कविता में उतारता है, वे उसके अपने होते हैं । किसी भी कवि के सारे क्षणों को कोई भी दूसरा कवि या अनुवादक जी नहीं सकता । मूल के साथ पूरा न्याय तो वह कदाचित नहीं कर सकता । केवल कुछ अपनी रुचि और अनुभूति के अनुकूल चुन लेनी चाहिए । अन्य प्रकार के अनुवादों की तरह काव्यानुवाद थोक का धंधा नहीं हो सकता ।

10.11.19. कवि की छाया

हर कवि भाषा-विशेष का ही होता है । वह जो कुछ कहता है वह केवल उसी भाषा में कहा जा सकता है और उसी रूप में कहा जा सकता है । उसकी महानता मूल रचना में होती है और मूल को पढ़कर ही हमें उसकी महानता के दर्शन हो सकते हैं । अनुवाद के द्वारा हमें कवि की छाया ही मिल सकती है । काव्यानुवाद का काम मूल रचयिता या रचना का परिचय है ।

10.11.20. कवितानुवाद कविता में

'यह प्रश्न उठता है कि कविता का अनुवाद पद्य में करें या गद्य में । इन दोनों के पक्ष-विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं । कविता का अनुवाद पद्य में होना चाहिए - इसके पक्ष में निम्नांकित विचार प्रस्तुत किये जाते हैं -

1. कविता छन्दबद्ध होती है चाहे वह मुक्त छन्द ही क्यों न हो ।
2. मूल रचना छन्दोबद्ध है, अतः उसके गद्यानुवाद में उसका एक यह अत्यन्त आकर्षक तत्व छूट जाता है ।

3. कविता काव्यानन्द के लिए पढ़ी जाती है, केवल भाव या विचार के लिए नहीं और यह काव्यानन्द अन्य छन्दबद्धता एवं उसके कारण संगीतात्मक तत्व, लय, ध्वनि आदि में भी होता है । गद्यानुवाद पाठक को वह काव्यानन्द नहीं दे सकता ।
4. अनुवाद का अर्थ ही है वह रूपांतरण जो अधिक से अधिक मूल के समान या समीप है । अनुवाद भी कविता ही होना चाहिए ।
5. काव्य की काव्यात्मक काव्योचित भाषा संरचना तथा शब्दक्रम इन्हीं बातों में होता है ।

10.11.21. गद्यानुवाद के पक्ष में

डॉ.तिवारी द्वारा अभिव्यक्त विचार ये हैं -

1. हर अनुवादक छन्द में अनुवाद नहीं कर सकता ।
2. पद्य में छन्द, तुक, गति आदि के बन्धन होते हैं । अतः अनुवाद को मूल के समीप नहीं रखा जा सकता । विश्व में जितने भी पद्यानुवाद हुए हैं, वे अनेक दृष्टियों से मूल से दूर हैं ।
3. कविता में शब्दों का चयन होता है । मूल के चयन में छन्द अनुवाद सटीक नहीं हो जाता ।

10.11.22. क्षतिपूरक सिद्धांत

क्षतिपूर्ति सिद्धांत के अनुसार कविता का अनुवाद छन्द में करना चाहिए । इसके कुछ छूटने के साथ कुछ जुड़ भी जाता है । क्षतिपूर्ति सिद्धांत के अनुसार कविता का अनुवाद पद्य रूप में ही करना चाहिए ।

10.11.23. सफल काव्य अनुवादक

कन्नड और हिन्दी के कतिपय सफल अनुवादक यथा आचार्य बी.एम.श्रीकंठय्याजी, श्रीधर पाठकजी आदि ने इंगलीष गीतेगळु, एकान्तवासी योगी आदि अनुवादों से इस प्रकार का प्रभाव प्रसारित किया कि उनके कथ्य से

प्रभावित होकर कन्नड और हिन्दी के कई कवियों ने मौलिक ग्रंथों की रचना की प्रेरणा प्राप्त की है ।

श्रीधर पाठक जी ने गोल्डस्मित कृत 'हेरमिट और डेसरटेड विलेज' का अनुवाद एकान्तवास योगी और ऊजड़ गाँव के रूप में किया ।

10.11.23.1. अंग्रेज़ी से कन्नड में कृत काव्यानुवाद

1. आचार्य बी.एम.श्रीकंठय्या द्वारा अंग्रेजी गीतों का अनुवाद ।

10.11.23.2. कन्नड से अंग्रेज़ी में कृत काव्यानुवाद

1. कन्नड वचन साहित्य अनुवाद ।

10.11.23.3. हिन्दी से रूसी में कृत काव्यानुवाद

1. वारान्निकोव द्वारा मानस का रूसी अनुवाद

10.11.23.4. हिन्दी से कन्नड में प्रस्तुत काव्यानुवाद

आँसू का कन्नड अनुवाद ।

10.11.23.5. संस्कृत से कन्नड में प्रस्तुत अनुवाद

1. कालिदास के नाटक
2. भास के नाटक
3. वाल्मीकि रामायण का कन्नडानुवाद

10.11.23.6. हिन्दी से कन्नड में कृत काव्यानुवाद

1. कबीर वचनावली का कन्नड गद्यानुवाद
2. तुलसीदास कृत मानस का अनुवाद
3. पंत की कविताओं का कन्नडानुवाद
4. मानस का कन्नड काव्यानुवाद मूल छंदों में ।

10.11.23.7. अंग्रेज़ी से हिन्दी में कृत काव्यानुवाद

1. लाइट ऑफ एशिया का अनुवाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा
2. गीतांजली का काव्यानुवाद
3. मिल्टन का 'पैराडाइस लॉस्ट' का हिन्दी अनुवाद

10.11.23.8. कन्नड से हिन्दी में अनूदित काव्य

1. डॉ.डी.वी.गुंडप्पा का 'मंकुतिम्मन कग्ग' का अनुवाद
2. कुवेंपु कृत 'रामायण दर्शन' का अनुवाद

10.11.23.9. यूरोपीय काव्यों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में

1. होमर का 'इलियट'
2. डांटे का 'डिवाइन कामिडी'
3. कैंटरबरी का टेल्स ।

10.11.23.10. फारसी से अनुदित काव्य

1. फिरदौसी का शाहनामा

10.11.23.11. उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद

अनुवादक

1. पण्डित केशवप्रसाद पाठक
2. डॉ.मैथिली शरण गुप्त
3. श्री सुमित्रानंदन पंत
4. श्री रघुवंशलाल गुप्त
5. डॉ.हरिवंशराय बच्चन

10.12. निष्कर्ष

श्री.पी.के बालसुब्रह्मणियन के शब्दों में ईमानदारी, मूल लेखक के प्रति श्रद्धा व अनुवाद के लिए आवश्यक मनोभूमि की उपलब्धि काव्यासनुवाद के लिए

आवश्यक तत्व हैं । इस मनोभूमि में कृतिकार और कृति से तादात्म्य स्थापित कर लेना वांछनीय है । इस मनोभूमि की आधारशिला निर्वैयक्तिकता है ।

काव्यानुवाद के संबंध में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कठिन होने पर भी वह संभव है, उसकी प्रक्रिया कठिन है ।

काव्यानुवाद ब्रह्मानंद सहोदर माना जाता है । आप सफल काव्यानुवाद के माध्यम से चिंताक्रांत संसार के स्वांत को अनंत आनंद प्रदान कर सकते हैं । वही सफल काव्यानुवादक बन सकता है, जो काव्य से संबंधित विभिन्न घटक यथा रस, छंद, ध्वनि, औचित्य, रीति, वृत्ति, गुण, अलंकार आदि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर अनुवाद में उनका सफल निर्वहण कर सकता हो ।

10.13. सारांश

प्रस्तुत घटक में काव्यानुवाद से संबंधित विभिन्न तत्वों का निरूपण किया गया है । साथ ही काव्यानुवाद की विभिन्न समस्याओं एवं कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए उनके समाधानों के रूप में कतिपय महत्वपूर्ण सुझाव दिए गये हैं ।

मानव जाति के मन और मस्तिष्क की अत्यंत मधुर एवं मार्मिक अनुभूतियों का अभिलेख काव्य के नाम से सुज्ञात है । काव्य में कवि के जीवन के अमूल्य क्षणों के हास और अश्रु, सुख-दुःख, आशा-निराशा आदि का निचोड़ रहता है । साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा काव्य में अलंकार, रस, छंद, ध्वनि, औचित्य, रीति, वृत्ति, वक्रोक्ति, गुण आदि ऐसे तत्व अधिक महत्वपूर्ण होते

हैं, जिनका अनुवाद करना अत्यंत कठिन है ।

शक्ति साहित्य के अंतर्गत आनेवाली समस्त विधाओं में काव्य अत्यंत विशिष्ट विधा है । अतः काव्यानुवाद अत्यंत जटिल एवं कठिन है ।

प्रस्तुत घटक में काव्यानुवाद की संभावना एवं असंभावना, एतद् विषय से संबंधित विद्वानों के मत, काव्यानुवाद की समस्याएँ, काव्यानुवाद की कठिनाइयाँ, काव्य का कलात्मक शब्दानुवाद, काव्य के अनुवाद में अपेक्षित योग्यता एवं गुण, काव्यानुवाद के प्रकार, मूल कवि की आत्मा का ग्रहण, गद्य-पद्य चयन, अनुसृजन, ध्वनि एवं वर्णमैत्री, अर्थ बिंब, कवि हृदय का पुनःसृजन, अलंकार, काव्य रूप आदि से संबंधित सभी तत्वों का विश्लेषण किया गया है ।

काव्य के अनुवादक में स्रोत भाषा की कविता के कवि के हृदय को लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करने की विशेष शक्ति अपेक्षित है । अनुवादक में मूल कविता में निहित सार को आत्मसात् कर उसे अलंकार, रस, छंद आदि समस्त विशेषताओं के साथ लक्ष्य भाषा में पुनःसृजन के रूप में प्रस्तुत करने की शक्ति आवश्यक है ।

साहित्य जगत में काव्यानुवाद के रूप, विधा, प्रकृति आदि के संबंध में भी मतभेद हैं । कतिपय मनीषी विभिन्न तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि काव्य का अनुवाद कविता के रूप में ही होना चाहिए, अर्थात् पद्य में ही काव्य का अनुवाद होना चाहिए । अन्य विद्वान गद्य के पक्षधर हैं । कुछ भी हो, सभी इस मत से सहमत हैं कि अनुवाद चाहे किसी भी रूप में हो उसमें काव्यत्व की स्पष्ट छाप होनी चाहिए, अर्थात् काव्यानुवाद ऐसा हो, कि वह मौलिक कृति-सा गोचर

हो और उसकी रस गंगा में हमारा हृदय मग्न हो जाये ।

10.14. प्रश्न

1. काव्यानुवाद की विभिन्न समस्याओं का विवेचन कीजिए ।
2. सफल काव्यानुवादक में अपेक्षित योग्यताओं एवं गुणों का उल्लेख कीजिए ।

10.15. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

काव्य मानव जाति की श्रेष्ठ अनुभूतियों की रसात्मक अभिव्यक्ति है । वह मानव के मन रूपी उद्यान का वैभव है । साहित्य की अन्य विधाओं के अनुवाद की तुलना में काव्य का भाषांतरण अत्यंत कठिन है । जो विषय जितना भी अधिक जटिल होता है , वह उतना ही महत्वपूर्ण होता है । यह सत्य काव्यानुवाद के संबंध में भी खरा उतरता है । काव्यानुवाद की कई कठिनाइयाँ हैं । साहित्य संसार में ये समस्याओं के रूप में हमारे सम्मुख आती हैं । इस घटक के कई परिच्छेदों में इन समस्याओं का विवेचन किया गया है । निम्नसूचित समस्याओं का विश्लेषण इस प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित हैं-

1. काव्यानुवाद की जटिलता का निवारण
2. शक्ति साहित्य की विशेषताओं का आनयन
3. अनुवादक के आत्म विश्वास की समस्या
4. अनुवादक के भाषा ज्ञान की समस्या
5. अनुवादक की काव्याभिरुचि की समस्या
6. काव्यानुवाद के लिए ग्राह्य रूप की समस्या अर्थात् यह समस्या कि अनुवाद गद्य में हो या पद्य में
7. सृजनात्मकता के आनयन की समस्या

8. अर्थ बिंब की पुनः प्रति स्थापना की समस्या
9. श्लेष, यमक आदि अलंकारों के अनुवाद की समस्या
10. ध्वनि बिंब की स्थापना की समस्या
11. लय और अंतर्लय की समस्या
12. स्रोत भाषा में प्रयुक्त प्रतीकों के लिए लक्ष्य भाषा में उपलब्ध उपयुक्त प्रतीकों के चयन की समस्या
13. अनुवाद के उचित प्रकार के चयन की समस्या अर्थात् यह समस्या कि भावानुवाद, शब्दानुवाद आदि में से किस प्रकार में अनुवाद किया जाये ।
14. शैली की समस्या
15. कथ्य और कथन के योग की समस्या
16. ''कुछ न जोड़ो कुछ न छोड़ो'' सिद्धांत की समस्या
17. आंतरिक, बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि से समर्थ एवं प्रभविष्णु शब्दों के ग्रहण की समस्या
18. उचित छंदों के प्रयोग की समस्या
19. रस पोषण की समस्या
20. शास्त्र ज्ञान की समस्या
21. सतत अभ्यास की समस्या
22. गीतात्मकता की समस्या
23. भाषा की मूल प्रवृत्ति की समस्या

उपर्युक्त समस्याओं के निवारण हेतु कतिपय सुझाव भी प्रस्तुत करने की आवश्यकता है । उत्तर को समग्रता प्रदान करने हेतु समस्याओं के विवेचन में उदाहरण भी दिए जा सकते हैं ।

II] सफल काव्यानुवादक में अपेक्षित योग्यताएँ एवं गुण

कवि सहज भावावेश, स्वयं मूल कवि के जीवन के विशेष क्षणों को जीने की क्षमता व स्रोत भाषा के कवि के हृदय को पकड़कर लक्ष्य भाषा में उसे पुनः प्रतिस्थापित करने की शक्ति काव्यानुवादक में अपेक्षित हैं ।

इस प्रश्न के उत्तर में निम्न सूचित अंशों का विश्लेषण अपेक्षित है -

1. अनुवादक में स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति की क्षमता
2. दोनों भाषाओं की प्रकृति के परिज्ञान की योग्यता
3. स्रोत भाषा में प्रयुक्त प्रतीकों के लिए लक्ष्यभाषा में उपलब्ध समानार्थी प्रतीकों के चयन की योग्यता
4. मूल पाठ का पुनःसृजन करने की शक्ति
5. अर्थ बिंब एवं ध्वनि बिंब की पुनःस्थापना की क्षमता
6. अलंकारों के सक्षम अनुवाद की योग्यता
7. छंदों के सफल निर्वहण की क्षमता
8. ध्वन्यात्मकता की प्रतिस्थापना
9. काव्य की प्रकृति के अनुसार अनुवाद के प्रकार यथा शब्दानुवाद, भावानुवाद आदि के ग्रहण का विवेक
10. निकटतम समतुल्यों के चयन का परिज्ञान
11. मूल कवि के व्यक्तित्व की सफल अभिव्यक्ति की क्षमता
12. मूल पाठ में निहित समस्त तत्वों को आत्मसात् करने की शक्ति
13. काव्यशास्त्र, मनोविज्ञान तथा अन्य शास्त्रों का ज्ञान
14. प्रतिभा, व्युत्पत्ति एवं संस्कार
15. अनुसृजन की क्षमता

घटक में सूचित अन्य गुणों का भी उल्लेख अपेक्षित है ।

10.16. शब्दावली

1.	साहित्यिक अनुवाद	-	Literary Translation
2.	काव्यानुवाद	-	Translation of poetry
3.	संदर्भ ग्रंथ	-	Reference books
4.	निबंध	-	Essay
5.	भेद	-	Difference, kinds
6.	महत्वपूर्ण	-	Significant
7.	प्रक्रिया	-	Process
8.	प्रशासनिक साहित्य	-	Administrative Literature

9.	ध्वनि	-	Suggested sense in poetry, Suggestion
10.	अलंकार	-	Figures of speech
11.	औचित्य	-	Propriety
12.	उदात्त	-	Noble, Dignified, Elevated
13.	आदर्श	-	Ideal
14.	मूलपाठ	-	Original Text
15.	कथ्य	-	Theme
16.	कथन	-	Expression, Narration
17.	अभिव्यक्ति	-	Expression
18.	चुनौती	-	Challenge
19.	रसास्वादन	-	Tasting/Experiencing sentiments
20.	हवन	-	Offering an oblation with fire
21.	अभिलेख	-	Record
22.	संभावना	-	Possibility
23.	समतुल्य	-	Equivalent
24.	कलात्मक	-	Artistic
25.	आत्मसात् करना	-	Taking in one's own soul's possession
26.	प्रारूप	-	Format
27.	अनुकरण	-	Imitation
28.	समन्वित	-	Connected in natural orders, Endowed with
29.	समन्वय	-	Succession, Conjection
30.	प्रतिध्वनि	-	Echo
31.	छन्द	-	Metre
32.	प्रतिष्ठान	-	Extablishment, Installation, Inauguration
33.	प्रतिभा	-	Genius, Splendour, Vivid imagination

10.17. काव्यानुवाद

संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

अ) निबंध

1. काव्यानुवाद : एक पुनः सृजन - डॉ.तिप्पेस्वामी
2. काव्यानुवाद : कठिनाइयाँ एवं संभवनाएँ - प्रो.नगीनचंद्र सहगल
3. श्रेष्ठ ग्रन्थों का अनुवाद - राजेन्द्र त्रिवेदी
4. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.एस.नरवणे
5. अनुवाद-कला : कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमाणी, वेद प्रकाश
6. अनुवाद - श्री.पी.के.बाल सुब्रह्मण्यिन
7. अनुवाद - एक सांस्कृतिक सेतु - डॉ.जी.गोपीनाथन
8. अनुवाद - एक कला - डॉ. तीर्थवसम्त
9. अनुवाद : एक वैज्ञानिक कला - ('अनुवाद' ग्रंथ से)
10. अनुवाद कला - डॉ.मिताली भट्टाचारजी

आ] ग्रंथ

i) भाषा विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी

ii) अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी

NOTES

NOTES

NOTES

इकाई ग्यारह

नाटक का अनुवाद

11.0. प्रस्तावना

11.1. उद्देश्य

11.2. नाटक के प्रकार

11.3. मंचीय ज्ञान

11.4. स्रोत व लक्ष्य भाषाओं की नाट्य परंपरा

11.5. भाव व रस की व्यंजना

11.6. अनुवाद की भाषा शैली

11.7. संवादों का अनुवाद

- 11.7.1. अनुवाद में वर्णन
- 11.7.2. संवादों का सफल अनुवाद : डॉ.गोपीनाथन जी एवं डॉ.मितालीजी का मत

11.8. नाटकानुवाद में अभिनेयता एवं रस पोषण

11.9. नाटकानुवाद में सांस्कृतिक परिवेश के अंतरण की समस्या

11.10. निष्कर्ष

11.11. सारांश

11.12. प्रश्न

11.13. प्रश्नों से संबंधित उत्तर

11.14 . शब्दावली

11.15. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

11.0. प्रस्तावना

पूर्व घटक में आपने काव्यानुवाद के विभिन्न तत्वों को अवगाहन किया है । प्रस्तुत अध्याय में आप नाटक के अनुवाद के विभिन्न तत्वों की जानकारी प्राप्त करेंगे । भारतीय आचार्य नाटक को भी काव्य मानते हैं । उनका मंतव्य है - 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' अतः काव्य एवं नाटक के अनुवाद की समस्याओं एवं तत्वों में अधिक अंतर दृग्गोचर नहीं होता । नाटक दृश्य, श्रव्य एवं वाच्य होता है । अतः नाटक के अनुवाद में रसपोषण, रंग सज्जा, अभिनय आदि की अतिरिक्त समस्याएँ भी होती हैं । अतः नाटक का अनुवाद करते समय आपको मंचीय साज सज्जा, स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं की नाट्य परंपराएँ, भाषा शैली, संवाद आदि पर विशेष ध्यान देना पड़ता है ।

11.1. उद्देश्य

प्रस्तुत घटक में नाटकानुवादक की विविध समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान भी प्रस्तुत किये गये हैं । नाटक के प्रकार, मंचीयता, अभिनेयता, नाटक के अनुवाद की कठिनाइयाँ, संवादों का अनुवाद, नाटकानुवाद में सांस्कृतिक परिवेश आदि विभिन्न विषयों का विवेचन प्रस्तुत घटक में किया गया है ।

नाटक भी काव्य ही है । कहावत है - 'काव्येषु नाटकं रम्यम् ।' काव्य के अनुवाद में जैसी कठिनाइयाँ होती हैं ; वैसी कठिनाइयाँ नाटक के अनुवाद में भी हमारे सम्मुख आती हैं । इनके अतिरिक्त नाटकानुवाद में संवाद रचना, अभिनेयता आदि अन्य कठिनाइयाँ भी होती हैं । इन सब का विवरण देते हुए

प्रस्तुत घटक में नाटक के महत्व को भी प्रकाश में लाया गया है । यह सिद्ध किया गया है कि अभिनेय होने के कारण नाटक का प्रभाव पाठकों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है । नाटक से संबंधित समस्त तत्वों का विश्लेषण इस घटक में इस दृष्टि से किया गया है कि पाठक नाटक के अनुवाद की समस्याओं, उनके परिष्कार के तत्वों तथा रहस्यों से पूर्णतः परिचित हों तथा संसार की विभिन्न भाषाओं में प्रणीत सुन्दर नाटकों का अनुवाद अपनी भाषाओं में करें ।

नाटक का अनुवाद काव्यानुवाद की तरह कठिन है । नाटक भी काव्य ही है । सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद कठिन होता है । डॉ.भोलानाथ तिवारीजी के शब्दों में नाटक के अनुवाद की कठिनाइयाँ काव्य आदि के अनुवाद से कई दिशाओं में भिन्न हैं । दोनों शैली प्रधान या अभिव्यंजना प्रधान हैं। नाटकानुवाद में अनुवादक को विषय के अतिरिक्त कथन पद्धति पर भी ध्यान देना पड़ता है । कुछ नाटक कविताओं से युक्त होते हैं ; या कभी - कभी अपवादतः कुछ स्थलों को छोड़कर पूरे के पूरे काव्यमय या कविता में होते हैं ।

11.2. नाटक के प्रकार

नाटक के दो प्रकार हैं - पठनीय एवं अभिनेय । उसका अनुवाद प्रायः ऐसा ही किया जायेगा, जैसा उपन्यास, कहानी आदि का होता है । अनुवादक अपने अनुवाद को अभिनेय भी बनाना चाहता है तो उसे अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ेगा ।

11.3. मंचीय ज्ञान

अनुवादक को रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए । मूल की परम्परा को जाने बिना अनुवादक नाटक के प्रतीकात्मक संकेतों को नहीं पकड़ पायेगा तथा लक्ष्य भाषा की रंगोचित दृष्टि को अनुवाद में न उतार पायेगा । हिन्दी में शेक्सपियर के कुछ नाटकों का बच्चनजी ने तथा रांगेय राघव ने अनुवाद किया है । डॉ.भोलानाथजी लिखते हैं कि इन अनुवादों में काव्यात्मकता है, किन्तु इन दोनों ही अनुवादकों की रंग मंचीय क्षेत्र में गति न होने के कारण अनुवादों में नाटकोचित प्रभाव का सर्वथा अभाव है ।

11.4. स्त्रोत व लक्ष्य भाषाओं की नाट्य परंपरा

डॉ.गोपीनाथनजी लिखते हैं - स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषओं की नाट्य परंपराओं की भिन्नता भी अनुवाद में कठिनाइयाँ उपस्थित करती हैं । भारतीय भाषाओं में कृत पाश्चात्य रूपकों के अनुवाद में यह समस्या विशेष रूप से उत्पन्न होती है । रंगनिर्देश, औपचारिकताएँ, लोक रंगमंच की युक्तियों का प्रयोग आदि के रूपान्तरण में अनुवादक को अपनी कुशलता एवं सजगता का परिचय देना पड़ता है । पाश्चात्य क्लासिकल नाटकों के मंचीय अनुवाद एवं प्रस्तुति में अक्लाजी तथा अन्य कई भारतीय निर्देशकों एवं अनुवादकों ने भारतीय रंगमंचीय परंपराओं का भी समावेश कर नाटक प्रस्तुति में युगान्तर क्रांति उपस्थित की है । इससे यह भी सिद्ध होता है कि सफल मंचीय अनुवाद, मंच शिल्पी, निर्देशक एवं अनुवादक के सम्मिलित प्रयत्न, प्रयोग एवं अनुभव से ही संभव है ।

11.5. भाव व रस की व्यंजना

डॉ.गोपीनाथनजी ठीक ही कहते हैं कि नाटक की सफलता भाव एवं रस की व्यंजना नर निर्भर है । नाटकानुवाद की कला की सफलता भी इन्हीं तत्वों पर आधारित है । नाट्यानुवाद में सृजनवत्ता और कला के तत्व अधिक और महज शब्दानुवाद की गुंजाइश कम होती है । इसी कारण से श्रेष्ठ नाट्यानुवाद किसी भी साहित्य का अभिन्न अंग बन जाता है । हिन्दी में राजा लक्ष्मण सिंह की शकुंतला, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कर्पूर मंजरी, मुद्राराक्षस, रत्नावली आदि अनुवाद, बंगाली से रूप नारायण पांडेय एवं प्रतिभा अग्रवाल के और मराठी से तेंदुलकर के अनुवाद हिन्दी नाट्य साहित्य के अभिन्न अंग हो गये हैं । इन सब नाट्यानुवादों की सफलता का कारण सृजनवत्ता ही है । वैसे तो प्रेमचंद ने गालसा वर्दी का (1930 - 31), लक्ष्मीनारायण मिश्र ने इब्सन का एवं राजेन्द्र यादव ने चेखव का (1958) अनुवाद कर यह सिद्ध किया है कि नाट्यानुवाद मौलिक लेखन जैसा ही महत्वपूर्ण सृजनात्मक कार्य है । यह भी ध्यान देने योग्य है कि नाट्यानुवाद के कारण ही हिन्दी में राष्ट्रीय रंगमंच की संभावनाएँ विकसित हुई हैं ।

11.6. अनुवाद की भाषा शैली

भाषा शैली की दृष्टि से कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं । नाटक की भाषा संवादोचित होनी चाहिए । छोटे-छोटे वाक्य, सरल और सहज शब्दावली होनी चाहिए, ताकि डॉ. भोलानाथ के शब्दों में - भाषा व व्यंजना का प्रवर्द्धन हो । प्रसाद के नाट्य पात्रों की भाषा की तरह न होकर मुहावरे और लोकोक्तियों

से युक्त भाषा होनी चाहिए । नाटक के पात्र अनेकानेक स्तरों के होते हैं - मोची, मज़दूर, किसान, वकील, डॉक्टर, विद्यार्थी, सुशिक्षित, अर्धशिक्षित, अल्पशिक्षित, विभिन्न भाषा भाषी यथा बंगाली, पंजाबी, राजस्तानी, हरियाणवी, सिन्धी आदि, विशिष्ट आयु के विशिष्ट परिवार के व्यक्ति – इन सब की भाषा - शैली एक - सी नहीं हो सकती । डॉ. रघुवीर जैसे शुद्धतावादी और संस्कृत प्रेमी व्यक्ति सड़क को 'रथ्या' कहेंगे तो पं.सुन्दरलाल जैसे मिश्रणवादी और हिन्दुस्तानी प्रेमी, राजकुमारी देवसेना को शहजादी देवसेना कहेंगे । वकील, डॉक्टर या विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अन्य शब्द चुनेंगे । इन प्रयोगों में कुछ-न-कुछ अन्तर पड़ेगा ।

11.7. संवादों का अनुवाद

नाटक के संवाद अभिनय से संबंद्ध हैं । अतः अनुवादक को केवल मूल संवाद ही नहीं देखना चाहिए, वरन् अभिनय को दृष्टि में रखकर संवादों का अनुवाद करना चाहिए ।

11.7.1. अनुवाद में वर्णन

प्रत्येक संस्कृति में नाटक या मंच की दृष्टि से कुछ बातें वर्णित होती हैं और कुछ आवश्यक होती हैं । इसका ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है ।

11.7.2. संवादों का सफल अनुवाद : डॉ.गोपीनाथन जी एवं डॉ.मितालीजी का मत

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के शब्दों में नाटकानुवाद की भाषिक सफलता उसके संवादों के प्रभावपूर्ण अनुवाद पर निर्भर है । डॉ.मितालीजी के शब्दों में

नाट्य भाषा की प्रमुख विशेषजाएँ हैं - सरलता एवं तीव्र संवेदन क्षमता । अनुवाद की भाषा में भी ये दोनों गुण अन्यंत अनिवार्य हैं । नाटकानुवाद में पात्रानुकूल भाषा शैली के परिवर्तन पर अनुवादक को विशेष ध्यान देना पड़ता है । नाट्य भाषा अकसर शिष्ट भाषा एवं अनौपचारिक जनभाषा का समन्वित रूप होती है । अनुवाद को जीवंत बनाने के लिए मूल के इस मिश्रण की कला को पहचानने एवं लक्ष्य भाषा की शैलियों एवं जीवंत मुहावरों का प्रयोग करने की क्षमता रखना आवश्यक है । शब्द पर ही नाट्य संवाद का बल रहता है । उसमें शब्दालंकारों से बढ़कर अर्थ की संप्रेषणीयता पर अनुवादक को अधिक ध्यान देना पड़ता है । अर्थालंकार, बिंब एवं प्रतीकों के प्रयोग पर अनुवादक को सावधान रहने की आवश्यकता है । वाक्य का नाटकीय प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है । इसलिए वाक्य रचना को प्रवाहपूर्ण एवं गतिशील बनाये रखना आवश्यक है । छन्दों के अनुवाद में भी नाट्य प्रभाव का पूरा ध्यान रखना पड़ता है । बच्चन के मेकबेथ व प्रतिभा अग्रवाल द्वारा किये गये बादल सरकार के इंद्रजित के काव्यांशों के अनुवाद छन्दों के नाट्यानुकूल अनुवाद के नमूने हैं । छन्दों का नीरस गद्यानुवाद नाटकीयता को वहन करने में प्रायः सफल नहीं हो पाता ।

11.8. नाटकानुवाद में अभिनेयता एवं रस-पोषण

काव्य के अभिनेय विधान को नाटक कहा जाता है । भरतमुनि के अनुसार रस ही नाटक का मूल तत्व है और नाटकानुवाद में भी अभिनय एवं रस का ही विशेष महत्व होता है । डॉ.गोपीनाथ जी का विचार द्रष्टव्य है - नाटकानुवादों को रूपान्तर याने एडाप्टेशन, सारानुवाद, भावानुवाद, अनुकरण

आदि कोटियों मं रखा जाता है, नाटकानुवादों को पाठ्यानुवाद और मंचीय अनुवाद इन दो कोटियों में विभाजित कर सकते हैं । पाठ्यानुवाद किसी भी नाटक के पाठ का शब्दानुसारी या वाक्यानुसारी अनुवाद मात्र होता है , जबकि मंचीय अनुवाद अभिनय, रस एवं प्रभाव को दृष्टि में रखकर प्रणीत अनुसृजन होता है । स्पष्ट है कि इस प्रकार के अनुवाद के लिए अनुवादक में नाट्य लेखन की क्षमता भी मौजूद होनी चाहिए । रंगमंच के लिए मंचीय अनुवाद का विशेष महत्व होता है और कभी-कभी पाठ्यानुवाद के आधार पर नया मंचीय अनुवाद सिद्ध करना पड़ता है । अन्य भाषाओं के नाटकों को मंच पर प्रस्तुत करते समय ऐसा परिवर्तन प्रायः आवश्यक हो जाता है ।

11.9. नाटकानुवाद में सांस्कृतिक परिवेश के अंतरण की समस्या

डॉ.जी.गोपीनाथन जी के अनुसार नाटकानुवाद की सबसे बुनियादी समस्या सांस्कृतिक परिवेश के अन्तरण की है । परिवेश के अन्तर के कारण ही कभी-कभी एक भाषा का सफल रंगमंचीय नाटक अनुवाद में उतना सफल नहीं निकल पाता । गहरे में व्यंजित अर्थ के आयाम, हास्य - व्यंग्य आदि सांस्कृतिक परिवेश से अभिन्न रूप से जुड़े रहते हैं । इस सम्बन्ध में पाठ्यानुवाद की दो प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं । भारतेन्दु, जी.पी.श्रीवास्तव आदि प्रारंभिक नाटककारों में गोचर होनेवाली प्रवृत्ति है, जिसमें स्रोत भाषा के परिवेश के स्थान पर अनुवाद में लक्ष्य भाषा का परिवेश स्थानापन्न किया जाता है । भारतेंदु ने 'मर्चेन्ट आफ वेनिस' शेक्सपियर के नाटक के अनुवाद 'दुर्लभ बंधु' (1880) में भारतीय वातावरण उपस्थित करते हुए वेनिस को वंशपुर, एण्टोनियो को अनन्त, पोर्शिया को पुरश्री, शैलाक को शैलक्ष, ईसाई को हिन्दू और यहूदी को जैन बना

दिया । स्वयं भारतेन्दु का यह अनुवाद बंगाल में प्यारेलाल मुख्योपाध्याय द्वारा प्रकाशित सरल नाटक (1877) नामक अनुवाद पर आधारित है । ऐसा लगता है कि फारसी रंगमंच के प्रभाव के कारण पाश्चात्य नाटकों का अनुवाद करते समय उनका परिवेश, पात्र, कथा वस्तु आदि का भारतीयकरण किया जाने लगा । वैसे तो सभी भारतीय भाषाओं में यह विशेष रूप से उभरी । जी.पी.श्रीवास्तव ने मोलियर के फ्रेंच नाटकों के अनुवाद में हास्य-व्यंग्य की अभिव्यक्ति भारतीय स्थितियों की अभिव्यक्ति द्वारा की है । उनके नाक में दम, मियाँ की जूती, मियां के सिर पर - आदि अनुवादों में फ्रेंच वातावरण नहीं के बराबर है । एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार नाटक के सांस्कृतिक परिवेश के संप्रेषण में मूल के तत्वों की रक्षा लक्ष्य भाषा की सहजता को दृष्टि में रखकर यथा संभव करना आवश्यक है । यह वास्तव में एक मध्यमार्ग ही है, जिसमें पाठ की नाटकीय अन्विति एवं मूल सांस्कृतिक तत्वों के बीच एक सन्तुलन बिठाने का प्रयास किया जाता है । यही नाट्यानुवाद में पुनः सृजन की प्रक्रिया है ।

11.10. निष्कर्ष

नाटक साहित्य सजीव रूपविधा है । नाटक संवादात्मक कथा और अभिनय का समन्वित रूप होता है । अनुवादक का ध्यान इन सभी तत्वों पर पूर्णतः होना चाहिए । नाटक की आत्मा में गद्य एवं पद्य दोनों की सुवर्ण वर्णात्मक धाराओं का सम्मिश्रण तथा संगीत और साहित्य दोनों का समन्वय भी होता है । अतः नाटक का अनुवाद करते समय विषयवस्तु एवं शैली के तत्वों पर

ही नहीं, वरन् सहज संवाद, मंचीयता, रसपोषण, सांस्कृतिक परिवेश, अभिनेयता आदि तत्वों पर भी विशेष ध्यान देना पड़ता है ।

11.11. सारांश

नाटक का अनुवाद इसलिए कठिन है कि वह केवल पठन के लिए ही नहीं, वरन् अभिनय के लिए भी है । वह एक साथ पाठ्य, श्रव्य तथा अभिनेय है । उसके संबंध में कहा गया है 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' अर्थात् काव्यों में नाटक अन्यंत सुंदर होता है । इस सुन्दरता के निर्वहण के लिए नाटक के अनुवादक को अत्यंत जागरूक रहना पड़ता है । उपर्युक्त तत्वों के पूर्ण निर्वहण में कई समस्याएँ अनुवादक के सामने आती हैं । नाटक में संवादों का अनुवाद भी बायें हाथ का खेल नहीं है ।

नाटक भी काव्य ही है । अतः काव्यानुवाद में निहित सभी समस्याएँ नाटकानुवाद में भी उपस्थित होती हैं ।

प्रस्तुत घटक में नाटक के अनुवाद से सम्बंधित विभिन्न समस्याएँ, नाटक के प्रकार, नाटक का महत्व, नाटक का सांस्कृतिक परिवेश आदि का विश्लेषण किया गया है । नाटक के दो प्रकार हैं - पठनीय एवं अभिनेय । पठनीय का अनुवाद मूल पाठ के अनुसार किया जाता है, जबकि अभिनेय नाटक का अनुवाद करते समय अभिनेयता या मंचीयता के विभिन्न तत्वों पर ध्यान देना पड़ता है । भाषा शैली, सांस्कृतिक परिवेश, पात्रोचित भाषा, प्रकाशप्रेषण आदि ध्यातव्य तत्व हैं ।

नाटक के सफल अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि अनुवादक मंचीय ज्ञान प्राप्त करें । प्रतीकात्मक संकेतों को भी सफल रूप से लक्ष्य भाषा पाठ में लाना पड़ता है ।

मंचीयता के ज्ञान के अतिरिक्त अनुवादक को स्रोत एवं लक्ष्य परंपरा से अवगत होना चाहिए । पाश्चात्य नाटक परंपरा का ज्ञान न हो तो अनुवादक अपने कार्य में सफल नहीं हो सकेगा ।

नाटक के अनुवाद में भाव एवं रस की व्यंजना महत्वपूर्ण है । नाट्यनुवाद में सृजनवत्ता एवं कला के तत्वों को अधिक स्थान दिया जाता है ।

हिन्दी में स्वदेशी एवं विदेशी नाटकों के अनुवाद के प्रभाव के कारण रूपक रचना स्तरीय बन सकी है । अनुवादों का अन्य प्रभाव राष्ट्रीय रंगमंच की स्थापना में द्रष्टव्य है ।

उपर्युक्त अंशों के अतिरिक्त नाटक के अनुवाद से संबंधित निम्न सूचित समस्याओं का विश्लेषण किया गया है -

1 नाट्य परंपरा ज्ञान की समस्या
2 अभिनय संबंधी तत्वों के अनुवाद की समस्या
3 रंग निर्देशन सूचना समस्या
4 अनुवाद की भाषा शैली की समस्या
5 संवादों के अनुवाद की समस्या
6 रसपोषण की समस्या
7 सांस्कृतिक परिवेश की समस्या ।

11.12. प्रश्न

1) नाटक के अनुवाद की समस्याओं का आकलन कीजिए ।

2) **टिप्पणी लिखिए -**

क) नाटक के प्रकार

ख) नाटक के अनुवाद का महत्व ।

11.13. प्रश्नों से सम्बन्धित उत्तर

I] नाटक के अनुवाद की समस्याएँ

नाटक के अनुवाद की समस्याएँ साहित्य की अन्य विधाओं के अनुवाद की समस्याओं से यत्किंचित् भिन्न हैं । नाटक भी काव्य है, अतः काव्य के अनुवाद की सभी समस्याएँ नाटकों के अनुवाद में भी हमारे सम्मुख आती हैं । नाटक पठ्य तथा अभिनेय होता है । अतः उसके अनुवाद में अभिनेयता की समस्या भी होती है । अभिनेय नाटक का अनुवाद करते समय दर्शकों की रुचि व योग्यता को भी दृष्टि में रखना पड़ता है । अतः नाटक के अनुवाद में भाषा शैली की समस्या भी उपस्थित होती है । मंचीयता की विभिन्न समस्याओं का भी सामना अनुवादक को करना पड़ता है । रंगमंच एवं परम्परा के अनुसार प्रतीकात्मक संकेतों का नियोजन अपेक्षित है ।

नाटक के अनुवाद में प्रमुखतः निम्न सूचित समस्याएँ उपस्थित होती हैं -

1) अभिनेयता की समस्या
2) प्रतीकात्मक संकेतों के अनुवाद की समस्या
3) पात्रानुकूल भाषा रचना की समस्या
4) स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की नाट्य परम्पराओं के ज्ञान की समस्या
5) नाटकीय औपचारिकता की समस्या

6) रंग निर्देशन की समस्या
7) पाश्चात्य नाटकों में परंपरा की समस्या
8) भाव एवं रस व्यंजना की समस्या
9) सृजनवत्ता की समस्या
10) अनुवाद की भाषा शैली की समस्या
11) अभिव्यंजना को सशक्त बनाने हेतु मुहावरों के प्रयोग की समस्या
12) संवादों के अनुवाद की समस्या
13) देशकाल और वातावरण के निर्वहण की समस्या - संकलनप्रय से संबंधित समस्या
14) सांस्कृतिक परिवेश के अंतरण की समस्या
15) पाश्चात्य नाटकों के भारतीयकरण की समस्या
16) भाषा की सजीवता व सरलता की समस्या

उपयुक्त समस्याओं का सोदाहरण विवेचन तथा समाधान-प्रस्तुतीकरण भी अपेक्षित हैं ।

II] क. नाटक के प्रकार

नाटक के कई प्रकार हैं । विभिन्न आचार्यों द्वारा प्रतिपादित नाटकों के वर्गीकरण में भिन्नता पायी जाती है ।

i] **अभिनेयता एवं अनभिनेयता की दृष्टि** से नाटक के दो प्रकार हैं -
1) अभिनेय नाटक
2) पठ्य नाटक

ii] **परम्परा की दृष्टि** से नाटक के प्रकार निम्न सूचितवत् हैं -
1) भारतीय परम्परा नाटक
2) पाश्चात्य परम्परा नाटक
3) फारसी परम्परा नाटक

iii] **गद्य - पद्य की दृष्टि** से नाटक के प्रकार एतद्वत् हैं -

1) गद्य नाटक
2) पद्य नाटक
3) चम्पू नाटक

iv] **पात्र संख्या** की दृष्टि से नाटकों के प्रकार निम्न सूचितवत् हैं -

1) एकपात्र नाटक - एक पात्राभिनय
2) बहुपात्र नाटक

v] अंक संख्या की दृष्टि से नाटक के दो प्रकार हैं -

1) एंकाकी नाटक
2) पूर्ण नाटक

vi] विषय की दृष्टि से नाटक के कई प्रकार हैं -

1) सामाजिक नाटक
2) धार्मिक पौराणिक नाटक आदि

vii] संस्कृत नाट्य शास्त्र के अनुसार नाटक के कई प्रकार हैं -

1) रूपक के दस प्रकार
2) उपरूपक के अठारह प्रकार

नाटक के उपर्युक्त प्रकारों के अनुवाद की सामान्य एवं विशेष समस्याएँ अनुवादक के सम्मुख उपस्थित होती हैं । इन समस्याओं का उल्लेख उत्तर में अपेक्षित है ।

ख) नाटक के अनुवाद का महत्व

नाटक पठ्य ही नहीं, वरन् अभिनेय भी होता है । अभिनेय नाटकों का अत्यंत शीघ्र एवं प्रत्यक्ष प्रभाव दर्शकों पर पड़ता है । मार्मिक प्रसंगों को देखकर

दर्शक साधारणीकरण के कारण रसमग्न हो जाते हैं । नाटकों में काव्यात्मकता भी होती है । यह साहित्य की अत्यंत रोचक विधा है । अतः नाटकों का अनुवाद महत्वपूर्ण है ।

विभिन्न परम्पराओं के नाटकों के अनुवाद से लक्ष्य भाषा की नाट्य सम्पत्ति की श्रीवृद्धि होती है । नाटक को काव्य भी माना गया है । काव्य के कला पक्ष की सभी विशेषताएँ नाटक में होती हैं । काव्यात्मकता से विभूषित नाटकों के अनुवाद से लक्ष्य भाषा की अभिव्यंजना शक्ति बढ़ती है ।

सांस्कृतिक परिवेश से संपन्न नाटकों के अनुवाद से दर्शकों की सांस्कृतिक चेतना में चार चाँद लग जाते हैं । विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध नाटकों का अनुवाद लक्ष्य भाषा की साहित्य संपदा का संवर्धक बनता है । क्रांतिकारी नाटकों के अनुवाद सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में नवीन क्रांति के स्रोत बनते हैं ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नाटकों का अनुवाद साहित्यिक गरिमा, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक क्रांति, चरित्र निर्माण आदि कई दष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ।

11.14. शब्दावली

1)	संवाद	-	Dialogue
2)	रंगमंच	-	Stage
3)	अभिनेता	-	Actor
4)	प्रतीकात्मक	-	Symbolic
5)	काव्यात्मक	-	Poetic

6)	नाट्य परंपरा	-	Dramatic Traditions
7)	रंग निर्देश	-	Stage Directions
8)	रूपक	-	Play
9)	निर्देशक	-	Director
10)	राष्ट्रीय रंगमंच	-	National Stage
11)	संभावनाएँ	-	Possibilites
12)	राजकुमारी, शहजादी	-	Princess
13)	अनौपचारिक	-	Non-formal
14)	भारतीयकरण	-	Indianisation
15)	समकालीन	-	Contemporary
16)	सन्तुलन	-	Balance

11.15. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

अ. निबंध

1.	नाटक का अनुवाद	-	डॉ.मिताली भट्टाचार्जी
2.	अनुवाद की कठिनाइयाँ	-	डॉ.वी.एस.नरवणे
3.	अनुवाद	-	श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन
4.	अनुवाद : एक कला	-	श्री तीर्थवसन्त
5.	साहित्य का अनुवाद	-	डॉ.महेन्द्र चतुर्वेदी

आ. ग्रन्थ

1.	अनुवाद विज्ञान	-	डॉ.भोलानाथ तिवारी
2.	अनुवाद कला : कुछ विचार	-	सं.आनंदप्रकाश खेमाणी, वेद प्रकाश
3.	अनुवाद कला	-	डॉ.जी.गोपीनाथन

NOTES

NOTES

इकाई बारह

मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद

12.0. प्रस्तावना

12.1. उद्देश्य

12.2. मुहावरों और लोकाक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ

12.3. लोकोक्ति का महत्व

12.4. समतुल्य मुहावरे

12.4.1. हिन्दी-अंग्रेजी मुहावरे

12.4.2. हिन्दी-फारसी समतुल्य मुहावरे

12.4.3. हिन्दी, फारसी, मराठी, अंग्रेजी, बंगला व गुजराती के समतुल्य मुहावरे

12.4.4. उत्तम समतुल्य मुहावरे

12.5. अर्थ एवं शब्द की दृष्टि से मुहावरों का विवेचन

12.6. मुहावरों में शब्द एवं अर्थ से संबंधित साम्य

12.6.1. अर्थ साम्य से समंचित मुहावरे

12.7. मुहावरों का अनुवाद

12.7.1. नये मुहावरों का गठन

12.7.2. शाब्दिक अनुवाद की विडंबना

12.8. मुहावरा : भाषिक इकाई

12.8.1. अभिव्यक्ति का सक्षम माध्यम

12.9. लोकोक्ति कोश

12.10. अन्य भाषा से आगत लोकोक्तियाँ

12.10.1. हिन्दी लोकोक्तियों पर अंग्रेजी का प्रभाव

12.11. भारतीय भाषाओं पर संस्कृत लोकोक्तियों का प्रभाव

12.12. हिन्दी लोकोक्तियों पर अन्य भारतीय भाषाओं का प्रभाव

12.12.1. हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में उपलब्ध समनार्थी लोकोक्तियाँ

12.13. मुहावरे एवं लोकोक्ति के लिए समानांतर प्रयोग

12.14. लोकोक्ति का भावानुवाद

12.14.1. उचित लोकोक्ति चयन

12.14.2. नई लोकोक्ति का गठन

12.14.3. लोकोक्तियों में अर्थांतर

12.14.4. शब्दानुवाद

12.15. लोकोक्ति कैसी हो

12.16. निष्कर्ष

12.17. सारांश

12.18. संभाव्य प्रश्न

12.19. अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में उत्तर के अंश

12.20. शब्दावली

12.21. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

12.0. प्रस्तावना

प्रस्तुत घटक में मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अनुवाद की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए साहित्य में निहित उनके महत्व का समुद्‌घाटन किया जा रहा है । आपको इस घटक में इस तथ्य से अवगत किया जाता है कि मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ लक्षणा एवं व्यंजना पर आधारित होने के कारण भावाभिव्यंजना में इनके प्रयोग से चार चाँद लग जाते हैं । 'दूसरों का धन लेना पाप है' - कहने के बदले में 'धन पराव विषते विष भारी' कहने से उक्ति में ध्वनि गांभीर्य प्रतिस्थापित होता है और अभिव्यक्ति में नई चारुता उत्पन्न होती है । आपको इस तत्व का बोध प्रदान किया जाता है कि मुहावरे और लोकोक्तियाँ किसी जाति अथवा समुदाय की संचित संपत्ति होती हैं ।

12.1. उद्देश्य

साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में आनेवाली समस्याओं में मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या अत्यंत विशिष्ट है, क्योंकि इनका अर्थ साधारणतः लक्षणा एवं व्यंजना पर आधारित रहता है, जैसे - 'इनके घर में पैसे का बाग लगा है ।' - इसमें 'पैसे के बाग का लगना' मुहावरे का अर्थ 'अधिक संपत्ति एवं आमदनी का होना' है । इस मुहावरे के प्रयोग से भाव की व्यंजना में नई सुषमा मुस्कुरा उठती है । इसका अनुवाद आसानी से किया जा सकता है, यथा -

कन्नड़ - इवर मनेयल्लि कासिन तोटविदे ।
तेलुगु - वीरिइंटिलो कासुल तोट उन्नदि ।

डॉ.मिताली भट्टाचारजी के शब्दों में सांस्कृतिक परिवेश के मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अनुवाद अत्यंत कठिन है, यथा - 'उसे सप्तपदी का आनन्द आ रहा है ।' सप्तपदी का सांस्कृतिक अर्थ जाननेवाला ही इसका अनुवाद कर सकता है । 'यहाँ लगी लंका की आग' इसके अनुवाद में भी सांस्कृतिक ज्ञान की आवश्यकता है ।

मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से भावाभिव्यंजना सक्षम बनती है । इनके अनुवाद में कई प्रकार की समस्याएँ हमारे सम्मुख आती हैं । प्रस्तुत घटक में इन समस्याओं का विवेचन करते हुए इनके समाधान भी प्रस्तुत किये गये हैं । इस घटक का लक्ष्य यह है कि इन सभी समस्याओं एवं समाधानों से अवगत होकर पाठक अनुवाद कार्य में संपूर्ण सफलता हासिल करे । पाठक अनुवाद के इस अंश के ज्ञान से सफल अनुवादक बनकर अपनी भाषा की ज्ञान संपत्ति के रत्नागार को नया वैभव प्रदान कर सकता है ।

12.2. मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ

अनुवाद की प्रमुख समस्याओं में मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या भी एक है । मुहावरे अभिव्यक्ति में नये प्राणों की प्रतिष्ठा करते हैं । मुहावरे और लोकोक्तियों के कारण कथन शैली तथा कथ्य अत्यंत प्रभविष्णु बनते हैं । उनका अनुबाद सरल नहीं है, क्योंकि अधिकतर मुहावरे अभिधा पर नहीं, बल्कि लक्षणा-व्यंजना पर आधारित हैं । मूल की अर्थछवि प्रतिष्ठापित कर अनुवाद को लक्ष्य भाषा में नये मुहावरे और कहावतें प्रतिस्थापित करनी पड़ती हैं ।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में नयी जान-सी आ जाती है । अनुवाद में सृजनात्मकता लाने हेतु रसात्मक साहित्य में मुहावरों का प्रयोग अपेक्षित है । मुहावरों के अनुवाद से लक्ष्य भाषा की संपन्नता बढ़ती है तथा स्रोतभाषा के भावों की व्यंजना लक्ष्यभाषा में सक्षम बनती है । मुहावरों का अनुवाद करते समय लक्ष्यभाषा की प्रकृति का हनन नहीं होना चाहिए । मुहावरों से सरसता एवं सौंदर्य की श्रीवृद्धि होती है ।

12.3. लोकोक्ति का महत्व

लोकोक्ति किसी जाति की अपनी निश्चित संपत्ति होती है । सुख और दु:ख की गंभीर अनुभूतियों के फलस्वरूप जनता के हृदय से ये लोकोक्तियाँ ऊर्ध्व धाराओं की तरह निकलती हैं । लोकोक्ति लोक की उक्ति है । यह अनुभवामृत है । किसी-किसी लोकोक्ति से एक कहानी ही ध्वनित होती है । उसमें एक महत्वपूर्ण घटना का इतिहास छिपा रहता है । ये जनता की जिह्वा रूपी खान से निकलनेवाले रत्न हैं ।

12.4. समतुल्य मुहावरे

मुहावरों का अनुवाद करते समय अनुवादक को यह देखना पड़ता है कि लक्ष्यभाषा में मूल भाषा के मुहावरे से मिलता जुलता मुहावरा विद्यमान है या नहीं । यदि समतुल्य मुहावरा संप्राप्त हो तो अनुवाद में उसी को स्थान देना चाहिए । शब्द दृष्टि से समान न होने पर भी अर्थ दृष्टि से समान होनेवाले मुहावरों को अपनाया जा सकता है, यथा - अंग्रेजी का मुहावरा Blue eyed boy का अर्थ है 'प्रिय व्यक्ति' । इसका समतुल्य अनुवाद 'नील नयन बालक' है, जो

हिन्दी की अभिव्यक्ति के अनुरूप नहीं है । अतः अन्य समतुल्य अभिव्यक्ति अपनानी पड़ेगी, यथा - 'आँखों का तारा' । अंग्रेजी भाषा के सतत प्रभाव के कारण हिन्दी में कई ऐसे मुहावरे गठित हो गये हैं, जो शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से मिलते-जुलते हैं । दोनों भाषाओं के मुहावरों में समतुल्यता दृग्गोचर होती है । डॉ.भोलानाथ तिवारी ने ऐसे कई समतुल्य मुहावरों का उल्लेख किया है, जिनमें से कतिपय मुहावरे नीचे दिये जा रहे हैं । इन मुहावरों से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि हमारे लेखकों ने अपनी भाषा की अभिव्यंजना में मोर पंख लगाने हेतु अन्य भाषाओं के अभिव्यक्ति तत्व एवं आयामों को ग्रहण किया है । मुहावरों के क्षेत्र में भी एतद्वत् ग्रहण कार्य स्वीकार्य है । यह ग्रहण कार्य चौर्य नहीं, बल्कि भाषा प्रेमियों का शौर्य है ।

12.4.1. हिन्दी-अंग्रेजी मुहावरे

1. अंग्रेजी - To be caught redhanded
   हिन्दी - रंगे हाथों पकड़ा जाना
2. अंग्रेजी - Ups and down of life
   हिन्दी - जीवन के उतार-चढ़ाव
3. अंग्रेजी - Child's play
   हिन्दी - बच्चों का खेल, बायें हाथ का खेल
4. अंग्रेजी - Crocodile's tears
   हिन्दी - घडियाली आँसू, मगर मच्छ के आँसू
5. अंग्रेजी - To keep in the dark
   हिन्दी - अंधेरे में रखना
6. अंग्रेजी - White lie
   हिन्दी - सफ़ेद झूठ
7. अंग्रेजी - White elephant
   हिन्दी - सफ़ेद हाथी

8. अंग्रेजी - Iron curtain
   हिन्दी - लौह आवरण
9 अंग्रेजी - Cold war
   हिन्दी - शीत समर
10. अंग्रेजी - Broken hearted
   हिन्दी - भग्न हृदय
11. अंग्रेजी - Bird's eyeview
   हिन्दी - विहंगम दृष्टि
12. अंग्रेजी - To throw mud
   हिन्दी - कीचड़ उछालना
13. अंग्रेजी - To be blood-thirsty
   हिन्दी - खून का प्यासा होना

12.4.2. हिन्दी फारसी समतुल्य मुहावरे

हिन्दी के सजग लेखक अंग्रेजी से ही नहीं, बल्कि अरबी, फारसी आदि भाषाओं से भी मुहावरों एवं लोकोक्तियों को स्वीकार कर रहे हैं । इसी प्रकार हिन्दी के कई अभिव्यक्ति-साधनों का स्थानांतरण अन्य भाषाओं में हुआ है । यह लेन-देन का मामला है, न कि चोरी-छिपाव का । हम अपने घर के गुलदस्ते को दूसरों के घर के फूलों से सजाते हैं ।

हिन्दी फारसी समतुल्य मुहावरे इस प्रकार हैं -

1. फारसी - अंगुस्त ब दन्दाँ
   हिन्दी - दाँतों तले उँगली दबाना
2. फारसी - आब शुदन
   हिन्दी - पानी-पानी होना

12.4.3. हिन्दी, फारसी, मराठी, अंग्रेजी, बंगला व गुजराती के समतुल्य मुहावरे

हिन्दी, फारसी, मराठी,बंगला आदि भाषाओं में कई समतुल्य मुहावरे

दृग्गोचर होते हैं । इनमें यत्र तत्र शब्द साम्य नहीं है, तथापि अर्थ साम्य दृष्टि गोचर होता है । प्रतीक शब्द कभी-कभी अन्य हो सकते हैं, किंतु अर्थ ध्वनि एवं अर्थ बिंब एक होते हैं । ऐसे संदर्भों में हम यह नहीं कह कहते कि एक भाषा के मुहावरों को चोरी से अन्य भाषा में अनूदित कर लिया गया है । डॉ.तिवारी द्वारा उल्लिखित समानार्थी मुहवारे इस प्रकार हैं -

1. फारसी - जमीन ओ आसमान यक कर्दन
   हिन्दी - जमीन-आसमान एक करना
   आकाश-पाताल एक करना
   मराठी - आकाश पताल एक करनों
2. अंग्रेजी - To throw dust into one's eyes
   मराठी - डोकयांत धूल फेंकणे
   बंगला - चोखे धूलो देया
3. अंग्रेजी - To build castles in the air
   हिन्दी - हवाई किले बनाना
   गुजराती - हवाई किल्ला बाँधवा ।

12.4.4. उत्तम समतुल्य मुहावरे

स्रोतभाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्यभाषा में कभी-कभी एक से अधिक समानार्थक मुहावरे मिल जाते हैं । ऐसे संदर्भों में उनमें से अत्यंत निकटतम समानार्थक समतुल्य मुहावरे को चुन लेना चाहिए । अर्थ की दृष्टि से जो पूर्ण समतुल्य है, उसी को अपनाना चाहिए ।

12.5. अर्थ एवं शब्द की दृष्टि से मुहावरों का विवेचन

स्रोतभाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्यभाषा में ऐसे मुहावरे का चयन करना चाहिए, जो शब्द और अर्थ की दृष्टि से समतुल्य हो । 'हवाई किले बनाना' या 'मनसूबे बाँधना' - जैसे मुहावरों के लिए To fly in the air मुहावरे की अपेक्षा To

build the castle in the air मुहावरा शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से सन्निकट है । अर्थ की दृष्टि से जो अधिक समान है, उसी को अपनाना चाहिए । उदाहरण के लिए -

हिन्दी - आँखों में धूल झोंकना
गुजराती - आखमा धूल नांखके
अंग्रेजी - To add fuel to flame
हिन्दी - आग में घी डालना
बंगला - आमावश्शेर चाँद
हिन्दी - ईद का चाँद ।

12.6. मुहावरों में शब्द एवं अर्थ से संबंधित साम्य

हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में शब्द एवं अर्थ की दृष्टि से समानता दिखाई पड़ती है । इस समानता के कई कारण हो सकते हैं, यथा-ज्ञान प्रसार के संदर्भ में मुहावरों का ग्रहण, अनुवाद प्रक्रिया, भाषा संपर्क, आदान-प्रदान, ग्रंथानुवाद, निबंधानुवाद आदि । डॉ.भोलानाथ तिवारी, डॉ.जी.गोपीनाथन, डॉ.विश्वनाथ अय्यर, डॉ.तिप्पेस्वामी, डॉ.मिताली भट्टाचारर्जी आदि विद्वानों के द्वारा उल्लिखित समतुल्य मुहावरे ये हैं -

1. हिन्दी - नानी याद आना
   पंजाबी - नान्नी याद आणा
2. हिन्दी - ईद का चाँद
   बंगला - ईदेर चाँद
3. हिन्दी - कुत्ते की मौत मरना
   गुजराती - कुतराने मोते मरणु
4. हिन्दी - आँखों का काँटा होना
   उडिया - आंखिर कांटा हेबा
5. हिन्दी - घाट-घाट का पानी पीना
   गुजराती - घाट-घाट ना पाणी पीणाँ

6. हिन्दी - राई का पर्वत करना
   मराठी - राई चा पर्वत करणे
7. हिन्दी - अपने पाँव पर आप कुल्हाडी मारना
   पंजाबी - अपणे पैरों ते कुल्हाडी मारना ।

12.6.1. अर्थ साम्य से समंचित मुहावरे

अनुवादक को यह देखना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में स्रोतभाषा के मुहावरे के साथ अर्थ साम्य रखनेवाला मुहावरा कौन-सा है । अर्थ साम्य के मुहावरे में शब्द की भिन्नता हो सकती है, जैसे -

1. हिन्दी - आँखें चार होना
   तेलुगु - आँखों का मिलना
   कन्नड - दिल से दिल का मिलना
2. हिन्दी - उल्लू का बच्चा
   तेलुगु - गधे का बच्चा (गाडिद कोडुकु)
3. हिन्दी - भगीरथ प्रयत्न
   तेलुगु - भगीरथ प्रयत्नमु

12.7. मुहावरों का अनुवाद

जब स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य मुहावरा नहीं मिले, तो अनुवादक लक्ष्य भाषा में उसका अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है, जैसे -

1. **मरना**
   हिन्दी - काल कवलित हुआ
   तेलुगु - काल मायेनु
   काल कवलित मायेनु ।
2. **गर्व का कम होना**
   तेलुगु - निशा दिगिनदि
   हिन्दी - नशा उतर गया
   कन्नड - मत्तु इळियितु

12.7.1. नये मुहावरों का गठन

जब स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्यभाषा में समतुल्य मुहावरा नहीं मिलता और जब मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद कठिन लगता है, तब लक्ष्य भाषा में नये मुहावरे का गठन किया जा सकता है । उदाहरण :-

1. **बरबाद होना**
   अंग्रेजी - To go to dogs
   हिन्दी - पायमाल होना
2. **प्रेम से देखना**
   हिन्दी - आँखें सौंपना
   अंग्रेजी - To entrust eyes
   तेलुगु - कन्नु लप्पगिंचुट

12.7.2. शाब्दिक अनुवाद की विडंबना

कभी-कभी मुहावरों को नहीं पहचानकर अनुवादक उसका साधारण अर्थ प्रस्तुत करता है । इससे स्रोतभाषा का अर्थ-गांभीर्य लक्ष्य भाषा में कुंठित हो जाता है । हिन्दी मुहावरों का अनुवाद करते समय हिन्दी प्रदेश में प्रचलित अर्थ जानना आवश्यक है । 'उसकी नानी मर गई' का अनुवाद यदि शब्दों के स्तर पर करें तो अनुवाद हास्यास्पद हो जाता है - His grand mother died के रूप में शाब्दिक अनुवाद करे तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है । इसी प्रकार 'आँखों का तारा' का अर्थ है - परम प्रिय । 'तारा' शब्द के दो अर्थों में से ठीक अर्थ का चयन न कर "He is the star of my eyes" के रूप में अनुवाद करे तो मुहावरा हास्यास्पद हो जाता है । मुहावरे वस्तुतः एक जाति की संचित संपत्ति है । उस जाति में प्रचलित अर्थ का ज्ञान आवश्यक है । अंग्रेजी में To kick the

bucket का अर्थ है 'तड़प-तड़प कर मर जाना ।' शाब्दिक अनुवाद करने से अर्थ भंग हो जाता है । 'उसने बालटी पर लातें जमाई' - यह शाब्दिक अनुवाद मूल भाषा के मुहावरे का अर्थ नहीं देता ।

12.8. मुहावरा : भाषिक इकाई

प्रत्येक भाषा में मुहावरे उस जाति तथा भाषा क्षेत्र के आभूषण होते हैं । जनवादी चेतना के कारण मुहावरे के शब्दों में आत्मीयता का भाव आ जाता है । उस भाषा की प्रकृति के अनुरूप मुहावरा बनता है । मुहावरा वस्तुतः भाषिक इकाई है । उसका अनुवाद भाषिक इकाई के रूप में होना चाहिए । He turned the tables - मुहावरे का अर्थ है 'उसने सब तरह के प्रयत्न किये ।' To turn the tables एक भाषिक इकाई है । उसका अनुवाद यदि 'उसने सभी मेजें उलट पलट दीं ' - रूप में करें तो अनुवाद अटपटा लगेगा । । beg for her hand का अर्थ है - 'मैंने उससे पाणिग्रहण करने की इच्छा प्रकट की ।' अर्थात् 'मैंने उससे शादी करनी चाही ।' इस अर्थ में अनुवाद न कर यदि हम शाब्दिक अनुवाद - ''मैंने उसके हाथ के लिए भीख माँगी'' - के रूप में करें तो अनुवाद हँसने योग्य बन जाता है । मुहावरे का अनुवाद भाषिक इकाई के रूप में करना चाहिए ।

12.8.1. अभिव्यक्ति का सक्षम माध्यम

लोकोक्ति अभिव्यक्ति का सक्षम माध्यम है । मुहावरे में ध्वनि वैभव रहता है, जबकि लोकोक्ति में अनुभव की संपत्ति रहती है । 'उसकी आँखें लाल हुईं' में आँखों का लाल होना - एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है क्रुद्ध होना । ''आँखें

लाल हुई'' - वाक्य से क्रोध की मात्रा का अंदाजा लग जाता है । इसमें उक्ति - वैभव है । लोकोक्ति में उक्ति वैभव के साथ-साथ लोक-सत्य भी विद्यमान रहता है, जैसे - 'आप भला तो जग भला', 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का', 'विधि बलीयसि' आदि ।

उपर्युक्त लोकोक्तियाँ भावव्यंजना में अत्यंत सहायक होती हैं । सुख-दुःख का अनिश्चय बताने के लिए 'सब दिन जात न एक समान' लोकोक्ति का प्रयोग होता है । इन लोकोक्तियों से रसपोषण सरलता से संपन्न होता है ।

12.9. लोकोक्ति - कोश

लोकोक्ति कोश कई प्रकार के होते हैं, यथा - एक भाषा की लोकोक्तियों का कोश, बहु भाषा लोकाक्ति कोश आदि, यथा -

तेलुगु लोकोक्ति कोश
कन्नड लोकोक्ति कोश
लोकोक्ति पर्याय कोश
द्विभाषा लोकोक्ति कोश
बहु भाषा लोकोक्ति कोश
भारतीय लोकोक्ति कोश
हिन्दी, अंग्रेजी, रूसी लोकोक्ति कोश ।

लोकोक्ति कोश निर्माण अत्यंत कठिन है । कई व्यक्तियों का सहयोग इसमें अपेक्षित है । अनुवाद कार्य में लोकोक्ति कोश अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं । जब स्रोतभाषा की किसी लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में समानार्थी लोकोक्ति नहीं मिलती, तब उसका सरल अनुवाद प्रस्तुत करना ही उचित है ।

12.10. . अन्य भाषा से आगत लोकोक्तियाँ

विभिन्न संस्कृतियों के पारस्परिक आदान-प्रदान, सम्मिलन एवं संघर्ष से विभिन्न भाषाओं में लोकोक्तियाँ अन्य भाषाओं से आ जाती हैं । एक भाषा के लोग दूसरी भाषा के सदस्यों से लोकोक्तियाँ ग्रहण करते हैं । कभी-कभी ये लोकोक्तियाँ अन्य भाषा में ज्यों की त्यों स्वीकृत हो जाती हैं और कभी कभी उसका अनुवाद कर लिया जाता है । अंग्रेजों एवं मुसलमानों के संपर्क से कई लोकोक्तियाँ अंग्रेजी और अरबी फारसी से हिन्दी में आयी हैं, जैसे - फारसी लोकोक्ति 'कोह कन्दन व मूश बुला बुर्दन' ज्यों की त्यों स्वीकृत की गई है । हिन्दी में भी समानार्थी लोकोक्ति गोचर होती है - 'खोदी पहाड़ निकली चुहिया ।'

12.10.1. हिन्दी लोकोक्तियों पर अंग्रेजी का प्रभाव

अंग्रेजी का गहरा प्रभाव भारतीय भाषाओं पर पड़ा है, जिसके फलस्वरूप कई लोकोक्तियाँ अंग्रेजी से हमारी भाषाओं में आ गई हैं । इन लोकोक्तियों का सुन्दर अनुवाद लोक हृदय ने कर लिया है । डॉ.भोलानाथ तिवारी ने निम्नसूचित लोकोक्तियाँ उद्धृत की हैं -

1. अंग्रेजी - An empty mind is devil's workshop.
   हिन्दी - खाली दिमाग शैतान का घर ।
2. अंग्रेजी - Necessity is the mother of invention.
   हिन्दी - आवश्यकता आविष्कार की जननी है ।
3. अंग्रेजी - One fish infects the whole water.
   हिन्दी - एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है ।
4. अंग्रेजी - It requires two hands to clap.
   हिंन्दी - एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

5. अंग्रेजी - As you sow, so shall you reap.
कन्नड - बित्तिद्दन्ने बेळेदुको ।
हिन्दी - जैसे बोएगा वैसे काटेगा ।

12.11. भारतीय भाषाओं पर संस्कृत लोकोक्तियों का प्रभाव

भारतीय भाषाओं पर संस्कृत लोकोक्तियों का गहरा प्रभाव पड़ा है । सैकड़ों लोकोक्तियाँ हमने संस्कृत से यथावत् ग्रहण की हैं, जैसे -

'कामातुराणाम् न भयं न लज्जा'
'विधि बलीयसि'
'विद्या ददाति विनयम्'
'नहि ज्ञानेन सदृशं धनम्'
'यथा राजा तथा प्रजा'
'यथा माता तथा सुता'
'विद्वान् सर्वत्र पूज्यते'
'उदर निमित्तं बहुकृत वेषम्'
'विद्या विहीनः पशुः ।

संस्कृत की कई लोकोक्तियों का अनुवाद संसार की विभिन्न भाषाओं ने कर लिया है -

'यथा राजा तथा प्रजा'

यह लोकोक्ति हिन्दी, तेलुगु, कन्नड़ आदि भाषाओं में समान रूप से दिखाई देती है । इसी प्रकार 'सर्वेजनाः सुखिनो भवंतु' सभी भाषाओं में स्वीकृत है । कहीं-कहीं इन लोकोक्तियों का अनुवाद भी हुआ है, जैसे - 'जैसा राजा वैसी प्रजा ।' 'यथा गुरु तथा शिष्यः' - कहावत को हमने हिन्दी में निम्नसूचित रूपों में ले लिया है -

'जैसा गुरु वैसा शिष्य'
'चोर गुरु चंडाल शिष्य'
'गुरु घोर शिष्य चोर'

इस कहावत में अर्थ भेद भी दिखाई पड़ता है । 'अल्प विद्या प्रलयंकरी' कहावत को हिन्दी, असामी, बंगाली आदि भाषाओं में उसी रूप में ग्रहण किया गया है । यह कहावत अन्य रूप में भी पायी जाती है, जैसे -

'अल्पविद्या महागर्वी' ।

अंग्रेजी में भी इससे मिलती जुलती लोकोक्ति है, यथा - 'Empty vessel makes much noise' । संस्कृत लोकोक्ति का अनुवाद अन्य भाषाओं में हुआ है -

संस्कृत - अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।
हिन्दी - अधजल गगरी छलकत जाय ।
बंगला - आध गगोरी जल करै छल-छल ।
कश्मीरी - छरअय मअट छि वजान-खाली मटकी आवाज करती है ।
कन्नड - तुंबिद कोड तुलुकुवुदिल्ल
तेलुगु - निंडु कुंड तोणकदु

12.12. हिन्दी लोकोक्तियों पर अन्य भारतीय भाषाओं का प्रभाव

जिस प्रकार हिनदी का प्रभाव अन्य भाषाओं पर पड़ा है, उसी प्रकार अन्य भाषाओं की लोकोक्तियों का प्रभाव हिन्दी पर पड़ा है । डॉ.भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि हिन्दी की लोकोक्ति 'कुत्ते की दुम सौ बरस गाढो टेढी की टेढी' कदाचित तेलुगु की लोकोक्ति 'कुक्क तोक वंकर' अर्थात् 'कुत्ते की दुम टेढी' पर आधारित है । कन्नड़ में यह कहावत ऐसी है - 'नायि बाल डोंकु' । निम्न सूचित कहावतों में समानता दिखाई देती है -

तेलुगु - नोरु मंचिदैते ऊरु मंचिदि ।
हिन्दी - आप भला तो जग भला
अंग्रेजी - Good mind good find

डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार हिन्दी कहावत 'कहाँ राजा भोज कहाँ गंगुवा तेली' - बंगला कहावत - 'कोथाय राजा भोज, कोथाय गंगाराम तेली' का अनुवाद है । अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं -

तेलुगु - दूरपु कोंडलु नुनुपु
संस्कृत - दूरतः पर्वतः रम्यतः
हिन्दी - दूर के पहाड़ सुहावने, दूर के ढोल सुहावने
कन्नड - दूरद बेट्ट नुण्णगे ।

अंग्रेजी का प्रभाव भी हिन्दी पर पड़ा है, यथा -

अंग्रेजी - Every man's house is his castle
हिन्दी - अपना मकान् कोट समान
तेलुगु - मन इल्लु मन कोट ।

12.12.1 .हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में उपलब्ध समानार्थी लोकोक्तियाँ

हिन्दी, बंगला, गुजराती, उडिया, पंजाबी आदि भाषाओं में कई समानार्थी लोकोक्तियाँ दृग्गोचर होती हैं, जैसे -

हिन्दी - 'नाम बड़ा दर्शन छोटा'
बंगली - 'नाम बड़ो दर्शन छोटो'
मराठी - 'नाम मोट लक्षण पोट ।

अन्य उदाहरण हैं -

1. हिन्दी - 'घर की मुर्गी दाल बराबर'
   बंगला - 'घरेर मुर्गी दालेर शोमान'
2. हिन्दी - छोटी चिड़ियाँ चहक बड़ी
   तेलुगु - पिट्ट कोंचेमु कूत घनमु ।

12.13. मुहावरे एवं लोकोक्ति के लिए समानांतर प्रयोग

कहीं-कहीं मुहावरा शुद्ध लाक्षणिक रूप में प्रयुक्त होता है या कहीं-कहीं शुद्ध मेटाफर होता है । 'पानी पानी हो गया' - यह 'आग से पानी होना' के मूल रूप से बना और मूल में यह एक लाक्षणिक प्रयोग था । लेकिन बाद में वह बदल गया । डॉ.नगेन्द्र के अनुसार लाक्षणिक चमत्कार के कारण दो भाषाओं के मुहावरे एक-से बन जाते हैं । कहावत का संबंध जनता से होता है । संस्कृतियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं, अतः कहावतों का शब्दानुवाद प्रायः नहीं हो पाता और किया भी नहीं जाता है । उनके लिए समानांतर उक्तियों का ही प्रयोग करना चाहिए ।

12.14. लोकोक्ति का भावानुवाद

डॉ.भोलानाथ तिवारी जी का सुझाव है कि लोकोक्ति का शब्दानुवाद ठीक न बैठने पर उसका भावानुवाद कर देना अच्छा है । तिवारीजी ने निम्न सूचित उदाहरण दिये हैं -

1. संस्कृत - लोभः पापस्य कारणम्
   हिन्दी - **शब्दानुवाद** - लोभ पाप का कारण है ।
   भावानुवाद - लोभ पाप की जड़ है
   यह लोकोक्तिवत् है ।
2. अंग्रेजी - Diet cures more than the doctors
   हिन्दी - पथ्य सबसे बड़ा डाक्टर है ।
3. अंग्रेजी - Beads along the neck and devil in the heart.
   हिन्दी - गले में माला, दिल में काला ।

12.14.1. उचित लोकोक्ति चयन

अनुवादक को चाहिए कि स्रोतभाषा की लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में

उचित लोकोक्ति का चयन करे । यदि उचित एवं समानार्थी लोकोक्ति न मिले तो मूल लोकोक्ति का अनुवाद कर लेना अच्छा होगा । कभी-कभी आवश्यकता के अनुसार नयी लोकोक्ति गढ़ ली जा सकती है ।

हिन्दी लोकोक्ति - ''सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली'' के लिए यदि समानार्थक लोकोक्ति न मिले तो समतुल्य लोकोक्ति बना ले सकते हैं, यथा - तेलुगु - रात्रंता भोगमु प्रोद्दुन भक्ति रागमु । कबीर का दोहा - दिनभर रोजा रखत है, रात हनत है गाय ।

12.14.2. नई लोकोक्ति का गठन

यदि शब्दानुवाद एवं भावानुवाद से काम नहीं चलता तो अंततोगत्वा नई लोकोक्ति का गठन कर लेना चाहिए, जैसे -

1. तेलुगु - जाति जातिकि शत्रुवु
   अनुवाद - जात-जात का दुश्मन है ।
   नई लोकोक्ति - कुत्ता कुत्ते का दुश्मन है ।
2. अंग्रेजी - Blood is thicker than water
   अनुवाद - खून पानी से गाढ़ा होता है ।

तिवारी जी इसके अन्यरूप प्रस्तुत करते हैं -

अपने-अपने, गैर-गैर
अपने अपने ही होते है और पराये पराये ।

12.14.3. लोकोक्तियों में अर्थांतर

कभी-कभी भिन्न-भिन्न भाषाओं की लोकोक्तियाँ समनार्थक दिखाई देती हैं, किन्तु उनमें शब्दों के अर्थांत्र के कारण वे एकार्थक नहीं होतीं, जैसे -

संस्कृत - 'उद्योगं पुरुष लक्षणम्' हिन्दी में उद्योग का अर्थ नौकरी नहीं, बल्कि उद्योग धंधे, कारखाने का काम है । भाषांतर से अर्थांतर आ गया है ।

12.14.4. शब्दानुवाद

स्रोतभाषा में लक्ष्य भाषा की लोकोक्ति के लिए जब समनार्थक लोकोक्ति नहीं मिलती, तब अनुवादक के सम्मुख ये अन्य मार्ग रह जाते हैं -

1. स्रोतभाषा की लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में उपलब्ध समोद्देश्य लोकोक्ति को चुन ले,
2. मिलते-जुलते अर्थ की लोकोक्ति चुन ले,
3 स्रोतभाषा की लोकोक्ति का शब्दानुवाद कर ले ।

डॉ.भोलानाथ तिवारी जी ने चन्द उदाहरण दिये हैं । उनके साथ-साथ अन्य उदाहरण भी प्रस्तुत किये जा रहे हैं, यथा-

1. **बंगला**

अ. 'अजात गाचेर विजात फल' ।
आ. समानार्थक हिन्दी लोकोक्ति उपलब्ध नहीं है ।
इ. समतुल्य लोकोक्ति - 'विषैला पेड़ विषैला फल
ई. शब्दानुवाद - जैसा पेड़ वैसा फल ।
उ. समोद्देश्य लोकोक्ति - जैसी माता वैसी सुता ।

2. **असामी**

अ. रामर खाया, रावणर गीत गया ।
आ. हिन्दी - राम का खाये, रावण का गीत गाये ।
ई. तेलुगु - रामुनिकंड जीतम् रावणुनि गीतम् ।

3. **संस्कृत**

अ. भार्या रूपवती शत्रुः
आ. हिन्दी - सुन्दर पत्नी का जंजाल
इ. शब्दानुवाद - भार्या रूपवती शत्रु

4. अंग्रेजी

अ. Do evil and look for like

आ. हिन्दी - कर बुरा पा बुरा

इ. अनूदित - बुरा करो बद की राह देखो ।

ई. समीपस्थ - माडिद्दुण्णो महराया ।

5. अंग्रेजी

अ. All that glitters is not gold

आ. हिन्दी - हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती ।

इ. तेलुगु - मेरिसेदन्ता बंगारु कादु ।

ई. कन्नड़ - बेळ्ळगिरोदेल्ल हालल्ल ।

12.15. लोकोक्ति कैसी हो

उपर्युक्त विवेचन के बाद यह प्रश्न उठता है कि अनुवाद में स्रोत भाषा में निहित लोकोक्ति का लक्ष्य भाषा में कौन-सा रूप हो, याने -

1. क्या मूल लोकोक्ति की समानार्थक लोकोक्ति हो ?
2. या लक्ष्यभाषा में उपलब्ध समतुल्य लोकोक्ति हो ?
3. या स्रोत भाषा की लोकोक्ति का भावानुवाद किया जाय ?
4. या स्रोतभाषा की लोकोक्ति का शब्दानुवाद किया जाय ?
5. अथवा स्रोतभाषा की लोकोक्ति का स्वच्छन्द अनुवाद किया जाय ?
6. या स्रोतभाषा में उपलब्ध स्वच्छन्द लोकोक्ति का लक्ष्य भाषा में स्वच्छन्द अनुवाद किया जाय ?
7. अथवा मूल लोकोक्ति को यथावत् रख दिया जाय और उसका अर्थ लक्ष्यभाषा में दिया जाय ।

उपर्युक्त समस्या के संबंध में यह कहा जा सकता है कि मूल लोकोक्ति की पूर्ण भावाभिव्यंजना जिस रूप से होती है, वह रूप लक्ष्यभाषा में प्रदेय है । नीचे कतिपय उदाहरण दिये जा रहे हैं -

1. अंग्रेजी - Traitors are the worst enemies.
   हिन्दी - 'घर का भेदी लंका ढावे ।'
2. अंग्रेजी - Out of sight out of mind.
   हिन्दी - आँख ओट पहाड़ ओट
   तेलुगु - कंटिकि दूरम् मनसुकु दूरम्
   हिन्दी - नयन से दूर मन से दूर ।
3. तेलुगु - मुसलिदानिकि कूचुपूडि पाठम् ।
   हिन्दी - कहीं बूढ़े तोते भी पढ़ते हैं ?
   अंग्रेजी - Can we teach an old woman to dance ?
4. हिन्दी - आँख का अंधा, नाम नयन सुख राम ।
   तेलुगु - पेरु सिंहम्, एलुक परुगुलु ।
   कन्नड़ - हेसरु कुबेरप्पा केलस भिक्षाटने ।
   तेलुगु - पेरु हरिश्चन्द्रुडु नोरु निंडुगा अबद्धालु ।

12.16. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे किसी जाति का अनुभवामृत है । जीवन के सुख-दुःख, आशा-निराशा आदि के प्रसंगों में हृदय से निकले हुए उद्‌गार ही कभी मुहावरों के रूप में निकल पड़ते हैं और कभी वे लोकोक्तियों के रूप ले लेते हैं । जब सहयोग की जरूरत पड़ती है, तब आप ही आप व्यक्ति के मुँह से निकलता है - एकता में बल है । एकता की महत्ता बताते हुए नेता कह उठते हैं - United we stand, divided we fall. महाकवियों की उक्तियाँ मुहावरे और लोकोक्तियों के रूप में जनता की जिह्वा पर

नाचती रहती हैं, यथा -

* कोउ नृप होउ हमहि का हानी ?
* सब दिन जात न एक समान
* ओ ! मेरे नयनों के तारे, हृदय के हृदय !
* जिसने जनम दिया, वही सब कुछ देगा !
* श्री हनूमान ! धरो मान ।

12.17. सारांश

मुहावरे किसी भी भाषा की अभिव्यक्ति के खिले हुए फूल हैं । लोकोक्तियाँ वाणी के कंठहार हैं । फूलों और हारों के प्रयोग से परिवेश का सौंदर्य बढ़ता है । मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से वाणी में नई ऊर्जा और नई सुन्दरता का संयोजन होता है । सीता और राम 'एक दूसरे से प्रेम करते हैं - इस उक्ति को मुहावरेदार बनाने से अर्थ प्रभावोत्पादक बनता है, यथा - सीता और राम की आँखें चार हुईं । इसी प्रकार 'बहुत चिंता हो रही है' - वाक्य के स्थान पर 'चिंता दहति शरीरम्' लोकोक्ति का प्रयोग करने से अभिव्यंजना में नई तीव्रता आती है । सफल अनुवादक बनने के लिए लोकोक्तियों और मुहावरों का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । स्रोतभाषा से लक्ष्य भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय अनुवादक को यह भी देखना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में एतद् उक्ति से मिलती जुलती लोकोक्ति उपलब्ध है या नहीं । समानार्थक मुहावरा या लोकोक्ति मिले तो उसी का प्रयोग करना उचित होगा । यदि न मिले तो अन्य निकटस्थ भावबोधक उक्ति अपनानी चाहिए । यदि यह भी न मिले तो मुहावरे या लोकोक्ति का शब्दानुवाद या भावानुवाद कर लेना अच्छा है ।

प्रस्तुत घटक में मुहावरों एवं लोकोक्तियों की महत्ता, उनके प्रयोग की

उपादेयता, उनके अनुवाद में आगत समस्याएँ एवं तत्समाधान का विवेचन किया गया है । हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, उडिया, असामी, मराठी, उर्दू, फारसी, तेलुगु, कन्नड आदि भाषाओं के समानार्थक मुहावरों और लोकोक्तियों का भी विवेचन किया गया है । यह निरूपित किया गया है कि ये लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे सभी भाषाओं में समानार्थक भी हैं और भिन्नार्थक भी । यह भी इसमें प्रमाणित किया गया है कि हिन्दी की वाक्संपत्ति पर अंग्रेजी, फारसी, अरबी, मराठी, तेलुगु आदि भाषाओं का प्रभाव पड़ा है तथा उन भाषाओं पर भी हिन्दी का प्रभाव दृग्गोचर होता है ।

12.18. संभाव्य प्रश्न

1. मुहावरों के अनुवाद की समस्याओं का विवेचन कीजिए ।
2. लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याओं का विश्लेषण कीजिए ।

12.19. अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में उत्तर के अंश

1. मुहावरों के अनुवाद की समस्याएँ

मुहावरों का अनुवाद लक्ष्यभाषा की अभिव्यंजना शक्ति में चार चाँद लगा देता है । मुहावरा किसी भाषा का जबरदस्त सिक्का होता है । यह किसी जाति या समुदाय के सदस्यों के हृदयों से निकली हुई गंगा की धारा है । उनकी आशा और निराशा को तीव्र अभिव्यक्ति प्रदान करनेवाली ऊर्जा है । कहानी बढ़ती जा रही है - कहने के बदले में 'कहानी हनुमानजी की पूँछ बन रही हैं, कहने से अभिव्यंजना में लचक आ जाती है ।

इस लचकीली अभिव्यक्ति का अनुवाद सरल नहीं है । मुहावरों का अनुवाद करने हेतु अनुवादक को विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान हासिल करना पड़ता है । अनुभूति की व्यापकता अपेक्षित है ।

मुहावरों के सफल, सुन्दर व सक्षम अनुवाद से भाषा की वैभवश्री बढ़ती है । इनके अनुवाद की समस्याएँ इस प्रकार हैं -

1. स्रोतभाषा एवं लक्ष्य भाषा के ज्ञान की समस्या ।
2. विषयज्ञान की समस्या ।
3. मुहावरों को पहचानने की समस्या ।
4. मुहावरों के विभिन्न अर्थों में से संदर्भानुसार सही अर्थ ग्रहण करने की समस्या ।
5. मुहावरों के अनुवाद में उपयुक्त अनुवाद के प्रकार के चयन की समस्या ।
6. मुहावरों के स्वच्छन्द अनुवाद की समस्या ।
7. मुहावरों के भावानुवाद की समस्या ।
8. मुहावरों के शब्दानुवाद की समस्या ।
9. समानार्थक मुहावरों के चयन की समस्या ।
10. मुहावरों के अनुवाद में औचित्य की समस्या ।
11. सांस्कृतिक परिवेश से समंचित मुहावरों के अनुवाद की समस्या ।
12. समतुल्य मुहावरों के ज्ञान की समस्या ।
13. शब्द और अर्थ में निहित साम्य की समस्या ।
14. नये मुहावरों के गठन की समस्या ।

इस प्रश्न के उत्तर को समग्र बनाने हेतु उपर्युक्त समस्याओं का सोदाहरण विवेचन आवश्यक है । साथ ही समस्याओं के परिहार से संबंधित सुझाव अपेक्षित हैं ।

2. लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ

मुहावरों की तरह लोकोक्तियाँ भी भाषा विशेष की ही नहीं, वरन् जाति विशेष की संपत्ति हैं । किसी भी जाति अथवा संप्रदाय के अनुभवामृत का निचोड़ इन लोकोक्तियों से छलकता रहता है ।

लोकोक्तियों का अनुवाद बायें हाथ का खेल नहीं है । समानार्थक दिखाई देनेवाली लोकोक्तियों में भी भाववैषम्य दिखाई देता है । आचार-विचार, रीति-नीति, सांस्कृतिक गरिमा, इतिहास आदि के तत्वों से समंचित लोकोक्तियों का अनुवाद कष्टसाध्य है । मुहावरों के अनुवाद में संभाव्य सभी समस्याएँ लोकोक्तियों के अनुवाद में भी गोचर होती हैं ।

लोकोक्तियों के अनुवाद में निम्नसूचित समस्याएँ अनुवादक के सम्मुख आती हैं -

1. स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा के पूर्णज्ञान की समस्या
2. विषयज्ञान की समस्या
3. पर्यायज्ञान की समस्या
4. शब्दशक्ति के ज्ञान की समस्या
5. जाति विशेष की संस्कृति के ज्ञान की समस्या
6. ऐतिहासिक ज्ञान की समस्या
7. स्रोतभाषा में प्रयुक्त लोकोक्तियों के लिए लक्ष्यभाषा में उपलब्ध समानार्थक लोकोक्तियों को पहचानने की समस्या
8. लोकोक्तियों के शब्दानुवाद की समस्या
9. लोकोक्तियों के भावानुवाद की समस्या
10. स्वच्छन्द अनुवाद की समस्या
11. लोकोक्ति कोश से संबंधित समस्या
12 अन्य भाषाओं से आगत लोकोक्तियों के पुनर्गठन की समस्या
13. उचित लोकोक्ति की समस्या

14. नयी लोकोक्तियों के गठन की समस्या
15. अर्थांतरण की समस्या

उत्तर को समग्र एवं सुन्दर बनाने हेतु उपर्युक्त समस्याओं का सोदाहरण विवेचन आवश्यक है । समस्याओं के समाधान से संबंधित सुझाव भी अपेक्षित हैं ।

12.20. शब्दावली

मुहावरा	-	Idiom
लोकोक्ति	-	Proverb
सुषमा	-	Beauty
सांस्कृतिक ज्ञान	-	Cultural knowledge
भावाभिव्यंजना	-	Expression of ideas
घटक	-	Unit
समस्या का समाधान	-	Solution of problem
कथ्य	-	Theme
प्रभविष्णु	-	Effective
ऊर्ध्व धारा	-	Fountain
समतुल्य	-	Equivalent
एतद्वत्	-	Of this type
अर्थसाम्य	-	Similarity in meaning
प्रतीकशब्द	-	Symbolic word
भाषिक इकाई	-	Linguistic Unit
यथावत्	-	As it is

12.21. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

ग्रन्थ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन
3. व्यावहारिक हिन्दी : प्रयोग एवं विधि - प्रा.कामता कमलेश

निबंध

1. अनुवाद : एक कला - तीर्थवसन्त
2. साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ - डॉ.नगेन्द्र
3. कन्नड लोकोक्तियाँ - डॉ.एम.के.भारती रमणाचार्य
4. अनुवाद - एक सांस्कृतिक सेतु - डॉ.जी.गोपीनाथन
5. अनुवाद के प्रकार - डॉ.मिताली भट्टाचारर्जी
6. साहित्य का अनुवाद - डॉ.महेन्द्र चतुर्वेदी
7. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.एस.नरवणे ।

NOTES

NOTES

इकाई तेरह

कार्यालयी अनुवाद

13.0. प्रस्तावना

13.1. उद्देश्य

13.2. कार्यालयी अनुवाद

13.2.1. कार्यालयी अनुवाद का अर्थ

13.3. कार्यालयी अनुवाद के प्रकार

13.3.1. कार्यालयी अनुवाद की विशेषताएँ

13.3.2. शब्दचयन

13.4. कार्यालयी भाषा के पारिभाषिक शब्दों के स्रोत

13.5. कोशग्रंथ की सहायता

13.6. रूढ़िगत शैली का अनुवाद

13.7. प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद की समस्या

13.7.1. कानूनी अनुवाद

13.7.2. लक्ष्य भाषा की प्रकृति का ध्यान

13.8. प्रशासनिक अनुवाद

13.8.1. प्रशासनिक भाषा समस्या

13.8.2. एकार्थी भाषा

13.9. निष्कर्ष

13.10. सारांश

13.11. संभाव्य प्रश्न

13.12. उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

13.13. शब्दावली

13.14. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

13.0. प्रस्तावना

प्रिय पाठको, कार्यालयी अनुवाद का स्वरूप अनुवाद के अन्य प्रकारों के स्वरूप से सर्वथा भिन्न है । वस्तुतः यह आधुनिक युग में समुत्पन्न एक नई विधा है । यह शासन तंत्र का एक अविभाज्य घटक है । आधुनिक शासन एवं प्रशासन तंत्र कार्यालयों की कार्यवाही पर निर्भर है । कार्यालय के कार्य से संबंधित पत्रों का अनुवाद रसात्मक नहीं, वरन् सूचना प्रधान विषय के अनुवाद के अंतर्गत आता है । आप जब प्रशासन कार्यालय में नियुक्त होंगे, तब आपको ज्ञात होगा कि कार्यालय-अनुवाद कितना महत्वपूर्ण है । कार्यालय संबंधी पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के बिना यह अनुवाद संभव नहीं है । समूचे राष्ट्र में एक संकल्पना के लिए एक ही शब्द का प्रयोग होना चाहिए, यथा Commissioner शब्द के लिए हिन्दी में 'आयुक्त' शब्द ही प्रयुक्त होता है । कार्यालयी अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है ।

13.1. उद्देश्य

आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है । साहित्यिक एवं धार्मिक क्षेत्रों तक ही नहीं, कला, विज्ञान, तंत्र, प्रशासन आदि क्षेत्रों में अनुवाद को अग्रतांबूल का स्थान मिला है । इस महत्व के कारण विषय और क्षेत्रों के अनुसार अनुवाद के कई प्रकार अस्तित्व में आये हैं, यथा - साहित्यिक अनुवाद, धार्मिक अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद, ललित-कला अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, कार्यालयी अनुवाद, अभिलेख अनुवाद, अंतरिक्ष अनुसंधान संबंधी अनुवाद आदि । आज प्रत्येक राष्ट्र के समस्त कार्य कार्यालयों के माध्यम

से संपन्न हो रहा है । जन्म और मरण के विवरण के लिए कार्यालय का एक अलग अनुभाग है । इसी प्रकार पुलिस विभाग, आयकर विभाग, विधानसभा, लोकसभा, रक्षा, पर्यटन, परिवहन, वाणिज्य, कल-कारखाने आदि के लक्षाधिक कार्यालय भारत में विद्यमान हैं । इन कार्यालयों में पत्र-व्यवहार का कार्य अंग्रेजी, हिन्दी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से संपन्न होता है । इन कार्यालयों में हिंदी के जिस रूप का प्रयोग होता है, वह साहित्यिक रूप से भिन्न है । कार्यालय में जो कामकाज होता है, उससे संबंधित लक्षाधिक नये शब्दों का गठन हिन्दी में हुआ है । कार्यालय संबंधी संकल्पनाओं के लिए अंग्रेजी में जो शब्द हैं, उनका अनुवाद हिन्दी में किया गया और किया जा रहा है, यथा -

Office	-	कार्यालय
Official	-	कर्मचारी
File	-	मिसिल
Commissioner	-	आयुक्त
Principal	-	प्राचार्य
Lecturer	-	प्रवक्ता
Income Tax	-	आयकर
Pilot	-	वैमानिक, विमान चालक
Clerk	-	लिपिक
Stenographer	-	आशुलिपिक
Typist	-	टंकक

अनुवाद की सहायता के बिना कार्यालय का पत्र-व्यवहार संभव नहीं है । कार्यालयी अनुवाद ज्ञान साहित्य के अंतर्गत आता है ।

प्रस्तुत घटक में कार्यालयी हिन्दी की परिभाषा, उसके प्रकार, उसकी व्यापकता, अनुवाद के प्रकार की विशेषताएँ, कार्यालयी हिन्दी में अभिधा का

प्रयोग, शब्दचयन, शब्द-गठन-प्रक्रिया, पारिभाषिक शब्दों के स्रोत, कार्यालयी हिन्दी की शैली, प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद, प्रशासनिक अनुवाद में ध्यातव्य तत्व आदि कई विषयों का शास्त्रीय विवेचन किया गया है । उपर्युक्त अंशों की जानकारी से छात्र कार्यालयी हिन्दी में निष्णात बनेंगे । भावी जीवन में विभिन्न कार्यालयों में जब कार्य भार सँभालेंगे, तब कार्यालयी हिन्दी का ज्ञान उनके लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा । इस उपयोगी ज्ञान का प्रसारण ही प्रस्तुत घटक का उद्देश्य है ।

13.2. कार्यालयी अनुवाद

विषय के आधार पर कई प्रकार के अनुवादों का उल्लेख 'अनुवाद के प्रकार' शीर्षक घटक में किया गया है, यथा साहित्यिक अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद, कार्यालयी अनुवाद, क्रीड़ा विषयक अनुवाद, पत्रकारिता संबंधी अनुवाद आदि । इन विभिन्न प्रकारों के अनुवादों की पृथक्-पृथक् विशेषताएँ होती हैं । इन प्रकारों में कार्यालयी अनुवाद भी एक है । यह ज्ञान साहित्य के अनुवाद के अंतर्गत आता है ।

13.2.1. कार्यालयी अनुवाद का अर्थ

कार्यालयी अनुवाद का अर्थ वह भाषांतरण या अनुवाद है, जो विभिन्न कार्यालयों में अंग्रेजी से हिन्दी में अथवा अंग्रेजी से कन्नड़, तेलुगु, तमिल आदि भाषाओं में किया जाता है । ये कार्यालय सरकारी या गैर सरकारी कार्यालय हो सकते हैं ।

13.3. कार्यालयी अनुवाद के प्रकार

कार्यालयी अनुवाद के विभिन्न प्रकार हैं, - प्रशासनिक कार्यालयों से संबद्ध अनुवाद, न्यायालयों से संबंधित अनुवाद, डाकतार विभाग से संबद्ध अनुवाद, बीमा से संबंधित अनुवाद, रेल से संबद्ध अनुवाद, बैंक से संबद्ध अनुवाद, होटलों से संबंधित अनुवाद, विदेशी व्यापार से संबंधित अनुवाद आदि ।

13.3.1. कार्यालयी अनुवाद की विशेषताएँ

कार्यालय अनुवाद की विशेषताएँ ये हैं -

1. **अभिधा-प्रधान सामग्री : डॉ.मिताली जी का मत**

डॉ.मिताली भट्टाचारजी के शब्दों में कार्यालयी अनुवादों के लिए प्राप्त सामग्री अभिधा-प्रधान होती है । इसमें ध्वनि, अलंकार, रस आदि के लिए कोई स्थान नहीं है । रसात्मक साहित्य से यह सर्वथा भिन्न है । सृजनात्मक साहित्य की तरह इसमें लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग नहीं होता । अतः अनुवाद के लिए प्रयुक्त भाषा भी इसी प्रकार की होती है ।

उदाहरण

1. The clerk has availed two days casual leave.
   लिपिक ने दो दिन की आकस्मिक छुट्टी ली है ।
2. University Grants Commission has sanctioned a grant of two crores to Karnataka State Open University.
   विश्वविद्यालय अनुवाद आयोग ने कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के लिए दो करोड़ रुपयों का अनुदान संस्वीकृत किया है ।

उपर्युक्त अनुवाद में केवल अभिधा का प्रयोग किया गया है । इन वाक्यों

में प्रयुक्त एक एक संकल्पना के लिए एक एक पर्याय है ।

2. पारिभाषिक शब्द प्रयोग

कार्यालयी अनुवाद की दूसरी विशेषता यह होती है कि उसमें अनिवार्य रूप से पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है । ये पारिभाषिक शब्द प्रत्येक विषय के लिए भिन्न-भिन्न होते हैं, जैसे रेलवे के पारिभाषिक शब्द, कचहरी के पारिभाषिक शब्द, बैंकों के पारिभाषिक शब्द आदि । उदाहरण के लिए कतिपय पारिभाषिक शब्द दिये जा रहे हैं -

(अ) **रेल**

1. Inter Railway Liability - अंतर्रेलवे देयता
2. Key Board - कुंजी पटल

(आ) **बैंक**

1. Account - खाता
2. Deposit Amount - जमा राशी
3. Balance Book - तुलन बही, शेषबही ।

(इ) **प्रशासन**

1. Gazetted Officer - राजपत्रित अधिकारी
2. File - मिसिल, फाइल
3. Manager - प्रबंधक
4. Department - विभाग

अन्य शब्द

1. University Grants Commission - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ।
2. Clerk - लिपिक
3. Registrar - कुलसचिव, पंजीयक ।

13.3.2. शब्दचयन

कार्यालयी अनुवाद में अनुवादक को विषय के अनुसार शब्दों का चयन करना पड़ता है । बैंक के अनुवाद में इन्टरेस्ट का अर्थ ब्याज है । यहाँ इस शब्द का अर्थ रुचि नहीं है । एक ही अंग्रेज़ी शब्द के विभिन्न संदर्भों में भिन्न-भिन्न हिन्दी पर्याय शब्द प्रयुक्त होते हैं । Revenue शब्द के कई पर्याय हैं, यथा - राजस्व, माल-गुजारी, संप्राप्ति, आय ।

संस्कृत शब्द

आधुनिक काल में संस्कृत शब्द **समासों, उपसर्गों और प्रत्ययों से बनाए गये हैं**, जैसे - क्षतिपूर्ति, निदेशक, आबंटन, मंत्रालय, अवैतनिक, प्रशासन, पदोन्नति, प्राधिकरण ।

जनता से गृहीत शब्द - हुंडी, ठेका ।

मिश्रित शब्द

चन्द शब्द संकर हैं - अनुवाद ब्यूरो, जिलाधीश ।

डॉ.भोलानाथ तिवारी का सुझाव है कि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग मिश्रित रूप से न करके यदि कुछ संकलित रूप में करें, तो अनुवाद अधिक सुन्दर होगा । अनुवाद में 'वेतन-वृद्धि' का प्रयोग ठीक होगा, न कि 'तनख्वाह में वृद्धि ।' इसी प्रकार स्कूल में प्रवेश का प्रयोग ठीक नहीं है । उसकी जगह 'शाला में प्रवेश' उचित होगा ।

अन्य उदाहरण -

मिश्रित रूप	अपेक्षित रूप
कॉलेज शुल्क	महाविद्यालय का शुल्क ।

13.4. कार्यालयी भाषा के पारिभाषिक शब्दों के स्रोत

कार्यालयी भाषा के पारिभाषिक शब्द हिन्दी में कई स्रोतों से आये हैं । ये शब्द भिन्न-भिन्न कालावधियों में गृहीत हुए हैं । विभिन्न भाषाओं से गृहीत ये शब्द अब हमारी भाषा की संपत्ति हैं । ये स्रोत इस प्रकार हैं -

1. **मध्यकाल की भाषा से गृहीत शब्द**

   अरबी, फारसी के शब्द - अरफ़नामा, सुलहनामा, कानून ।

2. **आधुनिक काल में गृहीत अंग्रेजी शब्द**

   पोस्ट ऑफीस, फीस ।

3. **नव गठित शब्द**

   संगणक, वैमानिकी ।

13.5. कोशग्रन्थ की सहायता

कोश में एक शब्द के कई पर्याय दिये जाते हैं । अनुवाद के लिए शब्दों का चुनाव करते समय सावधानी न बरतने पर अनुवाद अटपटा हो जाता है । डॉ.भोलानाथ तिवारी लिखते हैं कि उनके मित्र ने 'As a matter of fact' का अनुवाद किया - 'तथ्य के पुद्गल' के रूप में । मैटर के लिए उन्होंने पुद्गल ले लिया, जो ठीक नहीं है । उचित शब्द ये हैं - वस्तुतः, वास्तविक रूप में, तथ्यतः, असल में ।

13.6. रूढ़िगत शैली का अनुवाद

कार्यालयी पत्रों में परंपरागत रूप में रूढिगत शैली में कई बातें कही जाती हैं । उन बातों का अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के प्रयोग और मुहावरे पर ध्यान देना चाहिए, अन्यथा अनुवाद हास्यास्पद बन जाता है ।

कार्यालयी पत्रों में इस प्रकार के प्रयोग होते हैं -

I am to add - इसका सही अनुवाद है - 'यह भी निवेदन है ।' कार्यालय के पत्र का अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के प्रयोग, स्वभाव आदि पर ध्यान देना चाहिए ।

I am to add का शब्दानुवाद 'मैं यह जोड़ता हूँ' - ठीक नहीं हैं । इसी प्रकार 'Yours faithfully' का शब्दानुवाद 'आपका विश्वासपात्र' ठीक नहीं है । उपयुक्त शब्द हैं - भवदीय और आपका । एक अन्य उदाहरण है - Please be kind enough to reply इसका अनुवाद 'कृपया उत्तर दें' ठीक होगा, न कि 'उत्तर देने तक की कृपा करें ।' कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे संदर्भों में शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद न करें, पूरे वाक्य का भाव समझकर हिन्दी के प्रयोग, मुहावरे आदि को ध्यान में रखकर सरल शब्दों में भाव को व्यक्त करें ।

13.7. प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद की समस्या

प्रशासन की भाषा सर्वत्र जनभाषा ही रही है । भारत में अंग्रेजी की जगह भारतीय भाषाएँ ले रही हैं । डॉ.जी.गोपीनाथन के शब्दों में राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता के कारण संसद, और सरकारी

कार्यालयों में हिन्दी से अंग्रेजी में प्रशासनिक और कानूनी अनुवाद की आवश्यकता बढ़ रही है ।

भारत सरकार का वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो आदि प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद के क्षेत्र में मानक कार्य कर रहे हैं । ये संस्थाएँ वस्तुतः राजभाषा के रूप में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग के लिए पृष्ठभूमि-निर्माण का कार्य कर रही हैं । शब्दावलियों, निदेशों आदि के बन जाने के कारण यह कार्य एक सीमा तक सहज बन गया है । परंतु अभी अनेक समस्याओं का सामना भी इस दिशा में करना पड़ेगा । संसद में तथा सरकारी विभागों में द्विभाषिक एवं बहुभाषिक स्थिति के बने रहने के कारण प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद की समस्या भारतीय प्रशासन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़ी हुई है ।

13.7.1. कानूनी अनुवाद

डॉ.जी.गोपीनाथजी कहते हैं - कानून से संबंधित सामग्री के संदर्भ में हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि उसमें शब्दावली एवं वाक्य विन्यास का ऐसा प्रयोग हो कि एक ही अर्थ निकल सके । उसमें मनमाने अर्थ लगाने की संभावना नहीं होनी चाहिए । इसलिए कहीं-कहीं शब्दानुवाद की भी आवश्यकता पड़ती है । प्रशासनिक शब्दावली की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि अंग्रेजी के शब्द के लिए कभी-कभी भारतीय भाषाओं में एकाधिक लगभग मिलते जुलते शब्द मिलते हैं, जिनका प्रयोग केवल प्रसंगानुसार ही किया जा सकता है, जैसे

Confidential = गोपनीय, अंतरंग । Interest = अभिरुचि, हित, स्वार्थ, व्याज, वृद्धि आदि । इसी प्रकार हिन्दी के एक शब्द के लिए अंग्रेजी में भी अनेक अनुवाद हो सकते हैं । प्रसंगानुसार अनुवादक को उचित प्रयोग का चुनाव करना होगा ।

जैसे - अनुबंध = Annexure, Contact ; आलेख = Writing draft आधिकारिक = Official, Authoritative आदि ।

वाक्य रचना के संबंध में स्रोत भाषा की सहजता को दृष्टि में रखना पड़ता है । अंग्रेजी के अन्य पुरुष और कर्मवाच्य वाले वाक्यों के अनुवाद में कहीं-कहीं उचित ढंग से सरल वाक्य बनाना पड़ता है । उदाहरण के लिए 'I am directed to inform you' जैसे वाक्य को 'आपको यह सूचित कर रहे हैं' - जैसे वाक्य में बदल सकते हैं । प्रशासनिक अनुवाद के लिए सबसे आवश्यक विषय यह है कि उसके प्रविधिक स्वरूप को बनाये रखते हुए भी सरल व स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए प्रयास किया जाय ।

13.7.2 : लक्ष्य भाषा की प्रकृति का ध्यान

कार्यालयी अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप एक वाक्य का, दो तीन वाक्यों में अनुवाद कर सकते हैं अथवा दो तीन वाक्यों का भाव एक वाक्य में व्यक्त किया जा सकता है - We have considered your difficulty. Accordingly ten days earned leave is granted. इसका शब्दानुवाद है -

''हमने आपका कष्ट मान लिया । तदनुसार दस दिन की अर्जित छुट्टी दी जाती है ।'' यह शब्दानुवाद है । इन दो वाक्यों के बदले एक ही वाक्य लिखने से हिन्दी की प्रकृति की रक्षा होती है, यथा - ''आपके कष्ट को ध्यान में रखते हुए हम आपको दस दिन की अर्जित छुट्टी दे रहे हैं ।'' भाव के स्पष्टीकरण के लिए यह आवश्यक है कि लक्ष्य भाषा की प्रकृति पर ध्यान दें ।

13.8. प्रशासनिक अनुवाद

प्रचार एवं अन्य साधारण विषयों से संबंधित भाषा की प्रकृति सामान्य व्यवहार की भाषा के समीप होती है । प्रशासनिक अनुवाद के अंतर्गत सरकारी पत्र, टिप्पण, आलेखन, अधिसूचना, विज्ञापन, सूचनाएँ, प्रतिवेदन, परिपत्र, अधिनियम, अधिसूचनाएँ, अर्ध सरकारी पत्र, तार, प्रचार सामग्री, प्रेस विज्ञप्तियाँ आदि का अनुवाद आता है । संसद तथा केन्द्रीय प्रशासन में अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है । लेकिन अन्य प्रदेशों में अंग्रेजी एवं प्रांतीय भाषा, हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषाओं के बीच अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है । कानूनी संहिताएँ, अधिनियम, संविधान एवं तत्संबंधी विषयों का अनुवाद कानूनी अनुवाद के विषय हैं । उपर्युक्त कुछ प्रकारों में ये दोनों तरह के अनुवाद कहीं-कहीं घुल मिल जाते हैं । प्रशासनिक अनुवाद के लिए जो भाषा प्रयुक्त होती है, उसमें विषय को सीधे ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है । जहाँ तक हो सके, लंबे वाक्य, अनावश्यक घुमाव-फिराव और अनावश्यक मुहावरों का प्रयोग नहीं होना चाहिए । प्रशासनिक भाषा की कुछ औपचारिकताएँ एवं परंपराएँ बन

गयी हैं । इसलिए कहीं-कहीं वे अनुवाद में अटपटी लग सकती हैं । प्रयोग करते-करते यह अटपटापन दूर हो सकता है ।

13.8.1. प्रशासनिक भाषा समस्या

प्रशासनिक अनुवाद की महत्वपूर्ण समस्या प्रशासनिक भाषा है, जो कुछ अंशों में तकनीकी भाषा है और कुछ अंशों में सामान्य भाषा के करीब है । कानूनी भाषा पूर्णतः तकनीकी प्रकृति की होती है और उसके शब्द एवं प्रयोग विशिष्ट होते हैं । जहाँ कहीं भी प्रशासन की भाषा कानूनी भाषा के करीब आती है, वहाँ वह तकनीकी बन जाती है ।

13.8.2. एकार्थी भाषा

वैज्ञानिक साहित्य की भाषा की तरह कार्यालयी भाषा पूर्ण रूप से एकार्थी होनी चाहिए । इस प्रकार के विषयों के अनुवाद में द्व्यर्थी भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए । Major's demand is accepted for grant of additional force by the General-in-charge. इस वाक्य में यह गलत अर्थ निकालने की संभावना है कि सेनाधीश स्वयं अधिक सेना भेजेगा । वस्तुतः सेनाधीश मेजर का अनुरोध स्वीकार कर रहा है । शब्दक्रम के दोष के कारण इस वाक्य से दो-दो अर्थ निकल रहे हैं । कार्यालयी भाषा के अनुसार वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - Major's demand for additional force is accepted by the General-in-charge.

इसका अनुवाद इस प्रकार है -

''अधिक सेना भेजने के लिए मेजर द्वारा प्रस्तुत माँग को सेनाधीश स्वीकृत करता है ।''

3.9. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कार्यालयी अनुवाद में आप तभी सफल व निष्णात बन सकते हैं, जब कि आप कार्यालय के कार्य से पूर्णतः अवगत होंगे तथा प्रशासनिक शब्दावली का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे । राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के कार्यालयों से संबंधित साहित्य एवं पत्रों के अनुवाद का महत्व आधुनिक युग में दिन दूना रात चौगुना हो रहा है । अनुवाद के विभिन्न प्रकारों में कार्यालयी अनुवाद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण बनता जा रहा है । कार्यालयों में प्रयुक्त पंजी, सूची, सूचना, अधिसूचना, सामान्य आदेश, परिपत्र, कूटपत्र, करार, संविदा, निविदा, नियुक्ति पत्र आदि का अनुवाद करने हेतु पारिभाषिक शब्दों का पूर्ण परिज्ञान आवश्यक है । कानूनी अनुवाद में निर्धारित पर्यायों का ही प्रयोग किया जा सकता है ।

13.10. सारांश

प्रस्तुत घटक में कार्यालयी हिन्दी से संबंधित विभिन्न विषयों का पूर्ण विश्लेषण किया गया है । ज्ञान-विज्ञान के प्रसरण के लिए अद्यतन युग में अनुवाद के अतिरिक्त और कोई दूसरा मार्ग नहीं है । समूचे देश का कार्य व्यवहार चलाने हेतु आज देश में लाखों कार्यालय कार्यरत हैं । उनमें साहित्यिक भाषा का नहीं, वरन् कार्यालयी भाषा का प्रयोग होता है । एक नमूना प्रस्तुत किया जा रहा है -

साहित्यिक हिन्दी

दमयंती की आँखों से जो पुष्प बाण निकले, उससे नल महाराज घायल हो गए ।

कार्यालयी हिन्दी

न्यायाधीश ने अपराधी को उसके अपराध के अनुसार दस साल के काले पानी की सजा दी ।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि कार्यालयी हिन्दी में प्रशासनिक हिन्दी का प्रयोग होता है ।

प्रस्तुत घटक में निम्नसूचित अंशों का विवेचन किया गया है -

1. कार्यालयी अनुवाद की परिभाषा
2. कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप
3. कार्यालयी हिन्दी के प्रकार
4. कार्यालयी अनुवाद की विशेषताएँ
5. कार्यालयी अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग ।
   यथा - - Keyboard - कुंजीपटल
   Manager - प्रबंधक ।
6. कार्यालयी अनुवाद में शब्द चयन
7. कार्यालयी हिन्दी में प्रयुक्त शब्दों के विभिन्न स्त्रोत
8. डॉ.भोलानाथ तिवारी का मत
9. कार्यालय हिन्दी की शैली
10. प्रशासनिक एवं कानूनी अनुवाद
11. कार्यालयी हिन्दी के अनुवाद में लक्ष्य भाषा की प्रकृति का ध्यान
12. प्रशासनिक भाषा समस्या
13. एकार्थी भाषा का प्रयोग ।

इस घटक में यह सूचित किया गया है कि कार्यालयी हिन्दी के अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए । इसमें प्रत्येक संकल्पना के लिए सुनिर्धारित पर्याय रहता है । विविध क्षेत्रों के अनुसार कार्यालयी हिन्दी के कई प्रकार अस्तित्व में आये हैं, यथा - विधि साहित्य संबंधी अनुवाद, संसदीय व्यवहार संबंधी अनुवाद, आयकर संबंधी अनुवाद, शैक्षणिक कार्यालयी अनुवाद आदि ।

13.11. संभाव्य प्रश्न

1. कार्यालयी अनुवाद की महत्ता निरूपित करते हुए उसके विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालिए ।

2. **टिप्पणी लिखिए -**

   अ. कार्यालयी अनुवाद में प्रयुक्त शब्दावली के स्रोत

   आ. कार्यालयी अनुवाद के प्रकार ।

13.12. उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

I. कार्यालयी हिन्दी की महत्ता एवं आयाम

अभ्यास के इस प्रथम प्रश्न के उत्तर में प्रस्तुत घटक के विभिन्न परिच्छेदों में संप्रदत्त अंशों का विवरण देना आवश्यक है । अनुवाद आधुनिक युग की प्रगति का घोषणा-पत्र है । अथवा यों कहें कि संसार के ज्ञान-विज्ञान की एक मात्र संपूर्ण वाहिका अनुवाद ही है । अंग्रेजों के आगमन से भारत की प्रशासन-पद्धति में कार्यालय पद्धति आ गयी है । इन कार्यालयों की भाषा में नवगठित पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है । पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों से अनूदित शब्द हैं, यथा -

Secretary	- सचिव
Secretariat	- सचिवालय
Bangalore Development Authority	- बेंगलूर विकास प्राधिकरण
Sales Tax	- बिक्री कर
Inspector of Police	- पुलिस निरीक्षक ।

इस प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का गठन सदा बढ़ता रहेगा । कार्यालयी हिन्दी के ज्ञान के बिना हम प्रशासन कार्य चला नहीं सकते । कार्यालयी हिन्दी का अनुवाद कार्य आसेतु हिमाचल सभी कार्यालयों में संपन्न हो रहा है । निम्नसूचित अन्य अंश इस प्रश्न के उत्तर में अपेक्षित हैं -

1. कार्यालयी अनुवाद की परिभाषा
2. कार्यालयी अनुवाद की व्याप्ति
3 कार्यालयी अनुवाद के विभिन्न क्षेत्र
4. कार्यालयी अनुवाद के प्रकार
5. प्रत्येक प्रकार के महत्व का निरूपण
6 कायार्लयी अनुवाद की विशेषताएँ
7 कार्यालयी अनुवाद के विभिन्न आयाम
8. प्रत्येक संकल्पना के लिए पर्याय
9. पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग
10. कार्यालयीन अनुवाद की शैली
11. कार्यालयी अनुवाद में एकार्थी भाषा का प्रयोग ।

II टिप्पणी

1. कार्यालयी अनुवाद में प्रयुक्त शब्दावली के स्त्रोत

कार्यालयी अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है । इसमें प्रत्येक संकल्पना के लिए पृथक् पर्याय होता है । ये सभी एकार्थी भाषा के शब्द होते हैं । द्व्यर्थी भाषा के शब्दों का प्रयोग इसमें बिलकुल नहीं होता ।

इन शब्दों के विभिन्न स्त्रोत इस प्रकार हैं -

1. **विभिन्न विषयों यथा प्रशासनिक क्षेत्रों से, यथा -**

अ. विधि क्षेत्र

आ. डाक तार विभाग

इ. बीमा विभाग

ई. संसद क्षेत्र आदि से ।

2. **विभिन्न भाषाओं से**

अ. संस्कृत से यथा - समीकरण, मंत्रालय, निगम आदि ।

आ. जनता से गृहीत शब्द - ठेका

इ. मिश्रित शब्द - विभिन्न भाषाओं के मिश्रण स्त्रोत, यथा - अनुवाद ब्यूरो ।

उपर्युक्त स्त्रोतों के अतिरिक्त निम्नसूचित स्त्रोतों का भी उल्लेख अपेक्षित है -

1. मध्यकालीन भाषा स्त्रोत - अरबी, फारसी के शब्द - कानूनगो, शिकायत, वज़ीर ।
2. आधुनिक कालीन अंग्रेजी स्त्रोत - बैंक, स्कूल आदि ।
3. नवगठित शब्द -
   वैज्ञानिक एवं तकनीकी नवगठित शब्द -
   मत्स्यालय - प्रपाठक आदि ।
   टिप्पणी में उदहरण अपेक्षित हैं ।

2. **कार्यालयी अनुवाद के प्रकार**

कार्यालयी अनुवाद के कई प्रकार हैं । ज्ञान-विज्ञान की शाखाएँ ज्यों-ज्यों बढती जा रही हैं, त्यों त्यों प्रशासन से संबंधित नये कार्यालय स्थापित हो रहे हैं । नये विभागों के नये कार्यालयों के अनुवाद कार्य भी पृथक्-पृथक् होते हैं । कार्यालयी अनुवाद के निम्नसूचित प्रकारों का संक्षिप्त विवेचन अपेक्षित है -

1. शिक्षा विभाग के कार्यालयों का अनुवाद ।
2. प्रशासनिक कार्यालयों से संबद्ध अनुवाद ।
3. विधि कार्यालय संबंधी अनुवाद ।
4. डाक तार विभाग से संबंधित अनुवाद ।
5. बीमा संबंधी अनुवाद
6. अन्य विभागों से संबंधित अनुवाद ।

13.13. शब्दावली

कार्यालयी अनुवाद	-	Official translation, i.e. translation pertaining to various offices
व्यावहारिक हिन्दी	-	Functional Hindi
घटक	-	Unit
साहित्यिक अनुवाद	-	Literary translation
पत्रकारिता अनुवाद	-	Translation pertaining to Journalism
गैर सरकारी	-	Non Governmental
प्रशासनिक कार्यालय	-	Administrative Offices
न्यायालय	-	Courts
डाक तार विभाग	-	Posts and Telegraph Department
बीमा	-	Insurance
ध्वनि	-	Suggestion
सृजनात्मक साहित्य	-	Creative literature
लिपिक	-	Clerk
आकस्मिक छुट्टी	-	Casual leave
विश्वविद्यलय अनुदान आयोग	-	University Grants Commission
पारिभाषिक शब्द	-	Technical Terms
उपसर्ग	-	Prefix
प्रत्यय	-	Suffix

क्षतिपूर्ति	-	Compensation
निदेशक	-	Director
आबंटन	-	Allotment
मंत्रालय	-	Ministry
अवैतनिक	-	Honorary
पदोन्नति	-	Promotion
प्राधिकरण	-	Authority
जिलाधीश	-	Collector
वेतनवृद्धि	-	Increment
डाकघर	-	Post Office
संगणक	-	Computer
राजभाषा विभाग	-	Department of Official Language
मानक कार्य	-	Standard Work
निदेश	-	Instructions
द्विभाषिक	-	Bilingual
बहुभाषिक	-	Multilingual
संभावना	-	Possibility
कर्तृवाच्य	-	Active voice
कर्मवाच्य	-	Passive voice
सरलवाक्य	-	Simple Sentence
मिश्रवाक्य	-	Complex Sentence
संयुक्तवाक्य	-	Compound Sentence
अर्जित छुट्टी	-	Earned Leave
टिप्पण	-	Noting
आलेखन	-	Drafting
विज्ञापन	-	Advertisement
सूचना	-	Notice
अधिसूचना	-	Notification
प्रतिवेदन	-	Report
परिपत्र	-	Circular

अधिनियम	-	Act
अर्धसरकारी पत्र	-	Demi Official letter
तार	-	Telegram
दूरभाष	-	Telephone
प्रचारसामग्री	-	Propagation Material
प्रेस विज्ञप्ति	-	Press Communique
संसद	-	Parliament
कानूनी संहिता	-	Legal code
संविधान	-	Constitution
औपचारिकता	-	Formality
परंपरा	-	Tradition

13.14. संदर्भ ग्रन्थ एवं निबंध

अ. गंन्थ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. व्यावहारिक हिन्दी : प्रयोग एवं विधि (भाग-I) - प्रो.कामता कमलेश
3. अनुवाद अभ्यास - (भाग-II) - द.भा.हिन्दी प्रचार सभा
4. अनुवाद : कला, सिद्धांत व प्रक्रिया - डॉ.रजनीकांत पांडेय
5. अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन
6. समन्वित प्रशासन शब्दावली - केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो

आ. निबंध

1. अनुवाद कला - डॉ.एस.एम.रामचन्द्रस्वामी
2. कार्यालयी अनुवाद - डॉ.मिताली भट्टाचार्जी
3. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.एस.नरवणे ।

NOTES

NOTES

ಆದೇಶ ಸಂಖ್ಯೆ : ಕರಾಮುವಿ/ಅಸಾವಿ/4–060/2013–2014 ದಿನಾಂಕ : 24–09–2013
ಒಳಪುಟ : 60 GSM MPM ವೈಟ್ ಪ್ರಿಂಟಿಂಗ್ ಪೇಪರ್ ಮತ್ತು ಹೊರಪುಟ: 170 GSM ಆರ್ಟ್‌ಕಾರ್ಡ್
ಮುದ್ರಕರು : ಅಭಿಮಾನಿ ಪಬ್ಲಿಕೇಷನ್ ಲಿ., ಬೆಂಗಳೂರು–10 ಪ್ರತಿಗಳು : 1,200

Karnataka State Open University

Manasagangotri Mysore - 570 006

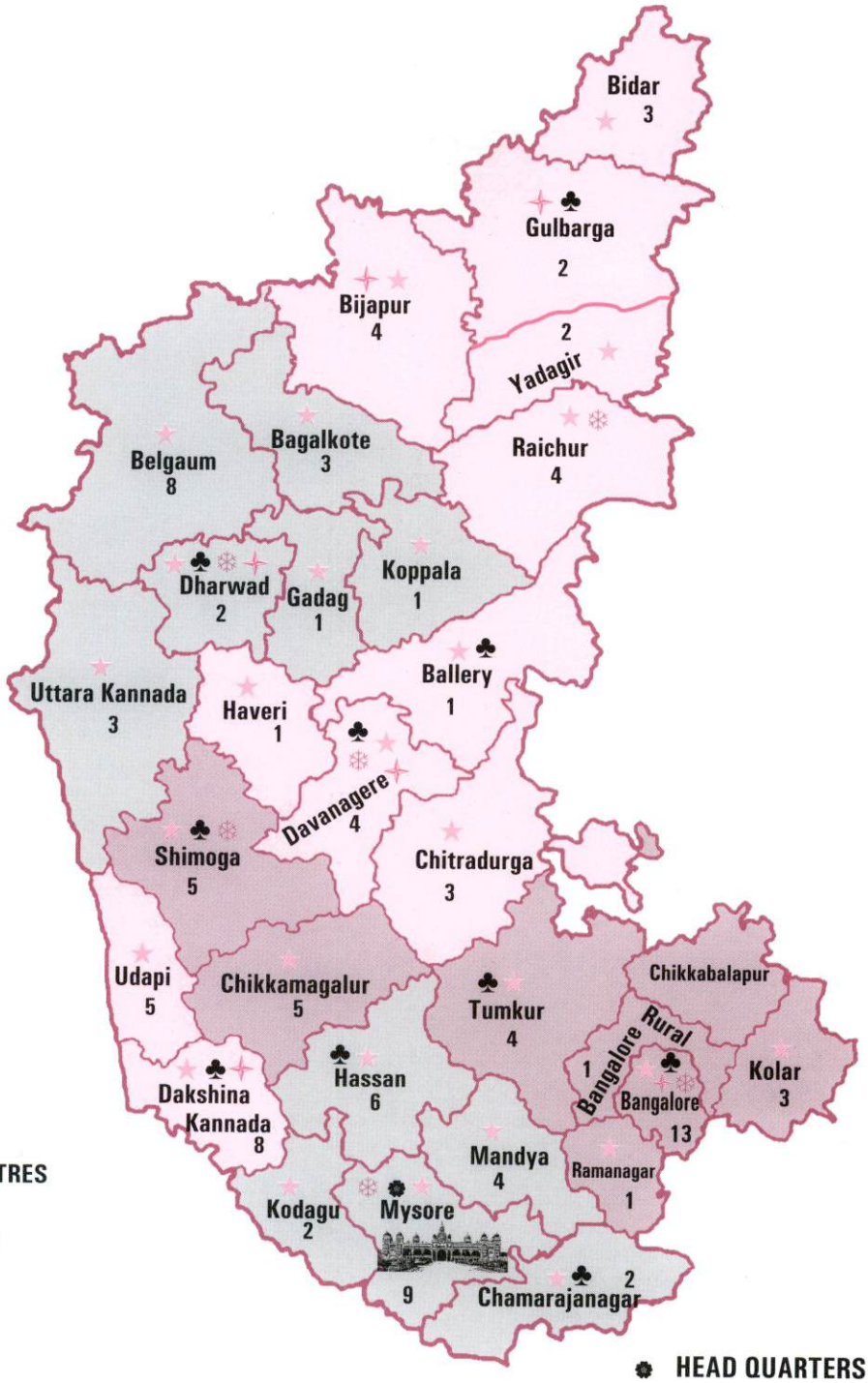

♣ **REGIONAL CENTRES**

Bangalore
Davanagere
Gulbarga
Dharwad
Shimoga
Mangalore
Tumkur
Hassan
Chamarajanagar
Bellary

✹ **HEAD QUARTERS**

★ Total Study Centres : 111

♣ Regional Centres : 10

❄ B.Ed Study Centres : 10

✦ M.Ed Study Centres : 08

Karnataka State Open University

Manasagangothri, Mysore - 570 006.

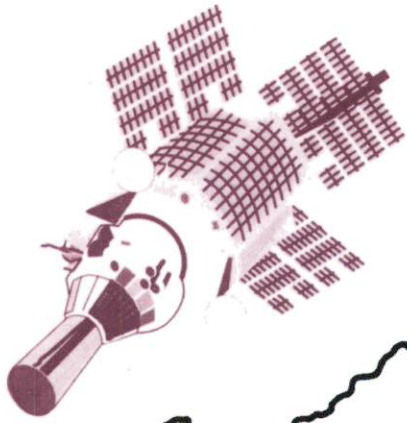

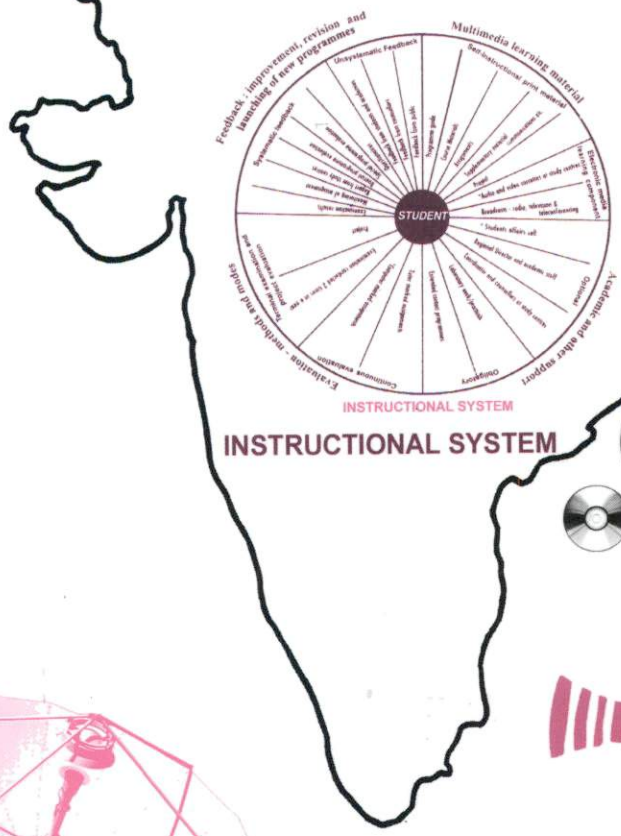

INSTRUCTIONAL SYSTEM